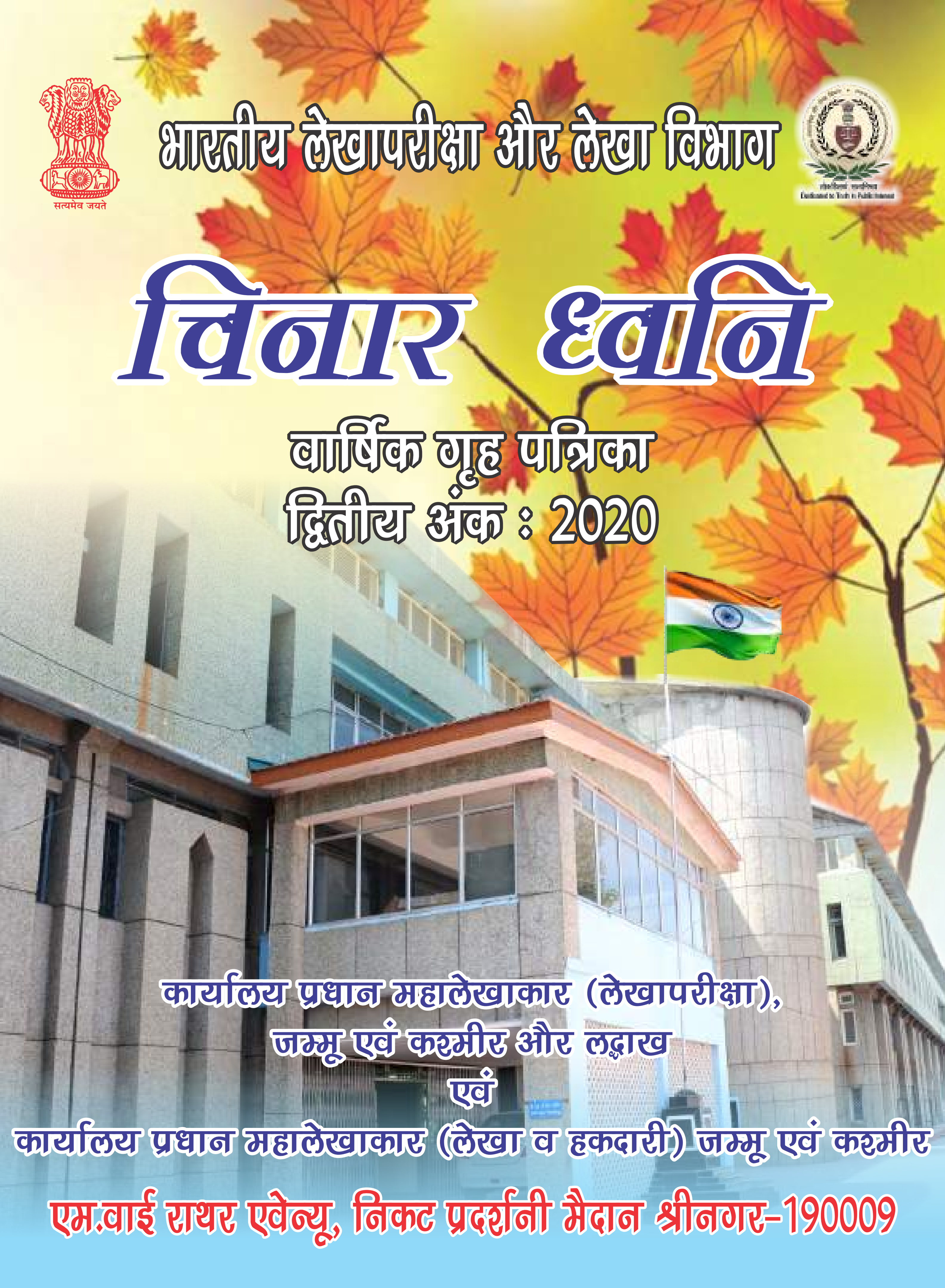

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

चिनार ध्वनि

वार्षिक गृह पत्रिका
द्वितीय अंक : 2020

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
जम्मू एवं कश्मीर और लद्दाख
एवं
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) जम्मू एवं कश्मीर

एम.वाई राथर एवेन्यू, निकट प्रदर्शनी मैदान श्रीनगर-190009

चिनार ध्वनि

विभागीय वार्षिक गृह-पत्रिका
दिसम्बर, 2020
(द्वितीय अंक)

चिनार ध्वनि-परिवार
संरक्षक
श्रीमती इला सिंह
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

डॉ अभिषेक गुप्ता
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
परामर्शदाता
श्री सेवांग थारचिन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन-लेखापरीक्षा)
श्री जय प्रकाश
उप महालेखाकार (लेखा-लेखा व हकदारी)
श्री रणजीत सिंह
उप महालेखाकार (प्रशासन-लेखा व हकदारी)
डॉ अजीत कुमार
उप महालेखाकार (पेन्शन-लेखा व हकदारी)
सुश्री इनाबत खालिक
उप महालेखाकार (सामान्य क्षेत्र एवं सामाजिक क्षेत्र - लेखापरीक्षा)
संपादक-मण्डल
श्री राजेश कुमार गुप्ता, वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी प्रकोष्ठ-लेखा व हकदारी)
श्री अब्दुल गनी हज़ाम, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष-लेखापरीक्षा)
सुश्री पूनम शर्मा, वरिष्ठ अनुवादक (लेखा व हकदारी)
श्री ऊदल सिंह सोलंकी, वरिष्ठ अनुवादक (लेखापरीक्षा)
श्री मनदीप, कनिष्ठ अनुवादक (लेखा व हकदारी)
श्री संजय कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक (लेखापरीक्षा)
श्री दिलखुश, डी.ई.ओ. (लेखापरीक्षा)

अस्वीकरण- "चिनार ध्वनि" पत्रिका की रचना राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से की गई है। इसमें निहित लेख, कविताएं तथा सुझाव इत्यादि मूलतः लेखकों के अपने हैं और यह आवश्यक नहीं है कि कार्यालय इनसे सहमत हो।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	प्राक्कथन	इला सिंह	4
2.	संदेश	डॉ अभिषेक गुप्ता	5
3.	संदेश	सेवांग थारचिन	6
4.	संदेश	जय प्रकाश	7
5.	संदश	रणजीत सिंह	8
6.	संदेश	डॉ अजीत कुमार	9
7.	संदेश	इनाबत खालिक	10
8.	संपादक की कलम से	संपादक मण्डल	11
9.	'डल' एक अहसास	श्रीमती इला सिंह	12
10.	महान संत 'कबीर'	श्री जयप्रकाश	13–16
11.	युवा की अपेक्षा	डॉ अजीत कुमार	17
12.	हिंदी के मायने	सुश्री पूनम शर्मा	18
13.	कोरोना काल की कहानी–स्वास्थ्यकर्मी की जुबानी	श्री हरकेश मीना	18
14.	'ट्रांसफर–एक अनुभव	सुश्री पूनम शर्मा	19–20
15.	मशालें	श्री इश्तियाक	21
16.	तुम	श्री शफी मोहम्मद मीर	21
17.	बचपन के दिन	सुश्री पूनम शर्मा	22
18.	एक बसंत को आना ही होगा	श्री विक्रम बादल	22
19.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020–आवश्यकता तथा परिवर्तन	श्री संदीप वर्मा	23–24
20.	वो दिन लौटकर आयेंगे	श्री अंकित कुमार	25
21.	अभिलाषा–एक वृद्ध की	श्री हरकेश मीना	26
22.	तन्हाई	श्री संजय कुमार	26
23.	अनुपम सौंदर्य	श्री इश्तियाक	27
24.	कायाकल्प	श्री शफी मोहम्मद मीर	27

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
25.	म से .... माँ	श्रीमती नीलकमल सैनी	28
26.	कोरोना के संग मुश्किल होता जीना	श्री बिजेन्द्र कुमार बेरवाल	29–32
27.	दो ऐनक	श्री राजकुमार साहिल	33
28.	बचपन	श्री संजय कुमार	33
29.	स्कूली जिंदगी में रिजेक्शन, असल जिंदगी से सिलेक्शन	श्री शंशांक कुमार चौधरी	34–36
30.	रण	श्री रमन कटारिया	37
31.	गज़ल	श्री इश्तियाक	37
32.	क्या वाकई इंकलाब कहीं खो गया है	श्री रुखसार अंजुम	38
33.	वसंत	श्री शफी मोहम्मद मीर	39
34.	क्यों	श्री विक्रम बादल	40
35.	मैं कहाँ हूँ	श्री रमन कटारिया	40
36.	औसद बंदा	श्री विशाल कांवत	41
37.	गृहिणीः एकमात्र औहदा या इससे कहीं ज्यादा	सुश्री स्वाति मलिक	42
38.	सभी बीमारियों का मुख्य कारण	श्री राजीव कुमार नैन	43–44
39.	मेरी मैं	श्री रमन कटारिया	45
40.	गज़ल	श्री विशाल कांवट	45
41.	राजभाषा अधिनियम, 196 (यथा संशोधित 1967) तथा रा.भा. नियम, 1976 (यथा संशोधित 1987 एवं 2007, 2011)	श्री ऊदल सिंह सोलंकी	46–47

सत्यमेव जयते

प्राक्कथन

मुख्य संरक्षक की कलम से.................................

मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि हमारे श्रीनगर कार्यालय की वार्षिक पत्रिका 'चिनार ध्वनि' के द्वितीय अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। जहाँ एक ओर विभागीय पत्रिकाओं को प्रकाशित करने का मूल उद्देश्य राजभाषा के प्रचार-प्रसार को प्रेरणा एवं संबल प्रदान करना है वहीं दूसरी ओर कार्यालयीन कार्यों में सरल हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना भी है। हिंदी एक अद्‌भुत क्षमता वाली वैज्ञानिक भाषा है, इसके मूल में विश्व की प्राचीनतम समृद्ध भाषा संस्कृत है और अन्य भारतीय भाषाएं इसकी ताकत हैं। हिंदी, भारतीय संस्कृति के सभी तत्वों की अपनी भाषा में अभिव्यक्ति का माध्यम है। इतनी समृद्ध भाषा होते हुए भी हम हिंदी का प्रयोग करते हुए झिझकते हैं। आज भी हम इस अपार क्षमता वाली भाषा हिंदी को कविता, चुटकुले और पहेलियों की भाषा ही समझते हैं, इसे ऊपर नहीं उठने देना चाहते हैं, यह विडंबना है। जहाँ तक इस पत्रिका में संकलित रचनाओं का प्रश्न है, तो इस कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों की सृजनशीलता का अनूठा संगम बनाती हुई प्रतीत हो रही है। मैं हिंदी के इन नव लेखकों को प्रोत्साहन देने और **सुधी** पाठकों तक इतनी सुंदर पठनीय सामग्री पहुंचाने के इस प्रयास के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि आप सभी के समेकित प्रयास से **'चिनार ध्वनि'** के आगामी अंक उन्नत शिखर पर आरूढ होंगे।

(इला सिंह)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

सत्यमेव जयते

आमुख

संरक्षक की कलम से.........................

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इस कार्यालय की गृह पत्रिका **'चिनार ध्वनि'** के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इसकी सफलता हम सभी पर निर्भर करती है। आज राजभाषा हिंदी का जो व्यापक एवं विस्तृत रूप देखने को मिलता है उसमें सभी भारतीय भाषाओं एवं अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है। आज हिंदी भाषा को समयानुसार गति देने हेतु शब्द ग्रहण करना अपेक्षित हो गया है ताकि हिंदी का प्रचार-प्रसार संपूर्ण राष्ट्र एवं अन्य देशों में भी हो सके। आज हम यदि अंग्रेज़ी को देखें तो उसमें विश्व की अनेक भाषाओं के शब्द मिल जायेंगें। इसी के फलस्वरूप विश्व समुदाय ने इसे अपनाया। यही प्रक्रिया हमें हिंदी के विकास के लिए भी अपनानी है। राजभाषा नियमों में भी बोलचाल की सरल हिंदी अपनाने की बात कही गई है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हम शासकीय सेवक हैं और हमारा कार्य आम जनता से जुड़ा है जो बहुत अधिक अंग्रेज़ी का प्रयोग नहीं करते हैं। वे आम बोलचाल एवं कार्यप्रणाली में ज्यादातर हिंदी या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करते हैं। अतः हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम उनसे पत्र व्यवहार करते समय अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें ताकि वे बिना हिचक एवं भय के हमसे जुड़ सकें एवं हम भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को नियत समय-सीमा के भीतर पूरा कर पाएं।

अतः आप सभी से मेरा आग्रह है कि सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें तथा दूसरों को भी प्रेरित करें। साथ ही तमाम अटकलों पर विराम लगाते हुए राजभाषा हिंदी के प्रति स्नेह एवं सम्मान की अभिव्यक्ति करें।

(डॉ अभिषेक गुप्ता)
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

सत्यमेव जयते

संदेश

कार्यालयीन गृह पत्रिका **'चिनार ध्वनि'** के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। हिंदी हम सबकी भाषा है, यह भारत के अधिकांश व्यक्तियों के द्वारा बोली व समझी जाने वाली भाषा है। इसका प्रयोग भारत की सांस्कृतिक धरोहर का बोध कराता है। किसी भी देश के विकास में भाषा की एकरूपता का होना अनिवार्य है। अतः हम सबको इसे निःसंकोच अपनाकर इसके व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

हम सभी का संवैधानिक दायित्व है कि हम सब राजभाषा का कार्यालयीन एवं दैनिक क्रियाकलापों में अधिक से अधिक प्रयोग करें। हिंदी के प्रयोगों को लेकर नित्य नए प्रयास हो रहे हैं और निःसंदेह इस कार्यालय में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी के प्रयोगों के साथ-साथ यह पत्रिका कार्यालय में साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभा के विकास का एक माध्यम भी है। अतः इस पत्रिका में कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों की सहभागिता प्रशंसनीय है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

सेवांग थारचिन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
लेखापरीक्षा

सत्यमेव जयते

संदेश

गृह पत्रिका **'चिनार ध्वनि'** का द्वितीय अंक आप को सहर्ष समर्पित है। यह अत्यंत गौरव एवं हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय से इतनी सुंदर पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। राजभाषा हिंदी संपूर्ण भारत को एक सूत्र में जोड़ने का काम करती है। इस पत्रिका के प्रकाशन में हिंदी भाषी रचनाकारों के साथ-साथ हिंदीतर भाषी रचनाकारों का भी योगदान है। पत्रिका परिवार के सभी रचनाकारों, पाठकों, लेखकों एवं संपादक मण्डल को इसके सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

मैं 'चिनार ध्वनि' पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

जय हिंद ! जय हिंदी !

जय प्रकाश
उप महालेखाकार (लेखा)
लेखा व हकदारी

सत्यमेव जयते

भारत की राजभाषा हिंदी की प्रगति में अपना सांस्कृतिक, सराहनीय एवं अमूल्य योगदान प्रदान करती हुई, हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका **'चिनार ध्वनि'** का द्वितीय अंक आपके समक्ष प्रस्तुत होने जा रहा है। यह अवसर मेरे लिए हर्ष एवं गौरव का है।

अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा का विश्लेषण करती यह पत्रिका रोज़ के कार्यालयीन कार्यों से परे अपनी रचनाओं को पाठकों के समक्ष रखने का एक उचित माध्यम है। रचनाकारों की प्रतिभा का आदर करते हुए मैं इस पत्रिका द्वारा विभिन्न भाषा-भाषी लोगों को एक सूत्र में पिरोने एवं हिंदी को एक सरल संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करने में सार्थक प्रयास की सराहना करता हूँ एवं रचनाकारों को धन्यवाद देता हूँ जिनके सहयोग ने इस पत्रिका को मूर्त रूप देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

(रणजीत सिंह)
उप महालेखाकार (प्रशासन)
लेखा व हकदारी

सत्यमेव जयते

संदेश

राष्ट्रभाषा, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगीत का हृदय से सम्मान करना प्रत्येक भारतवासी का दायित्व है। आधुनिक युग में जहां तकनीकी, प्रबंधन, चिकित्सा जैसी अनेक क्षेत्रों में उच्च शिक्षा अंग्रेज़ी माध्यम से ही संपन्न हो रही है, वहाँ हिंदी के विकास कार्यों को गति देना एक चुनौती बन गया है। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम हिंदी के प्रचार-प्रसार में यथासंभव सहयोग प्रदान करें और हिंदी की सेवा में लगे उन सच्चे सिपाहियों की सहायता करें जो देश-विदेश में हिंदी को उचित सम्मान दिलाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं।

'चिनार ध्वनि' पत्रिका के वर्तमान अंक के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ अजीत कुमार)
उप महालेखाकार (पेन्शन)
लेखा व हकदारी

संदेश

हिंदी पत्रिका **'चिनार ध्वनि'** के दूसरे अंक के प्रकाशन की मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इसके लिए मैं **'चिनार ध्वनि'** परिवार के सभी संपादन सहयोगियों, रचनाकारों एवं पाठकों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। सभी ने पत्रिका के सफल विमोचन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विभागीय पत्रिका राजभाषा हिंदी के सरल एवं सहज प्रयोग में विशेष रूप से योगदान देती है तथा साथ ही रचनात्मक प्रतिभाओं को उजागर करने का एक श्रेष्ठ माध्यम भी प्रदान करती है।

मझे विश्वास है कि राजभाषा हिंदी की प्रगति एवं प्रचार-प्रसार करने में **'चिनार ध्वनि'** अपने दायित्व का निर्वहन पूर्णतः करती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

(इनाबत खालिक)
उप महालेखाकार (सामा.क्षे.सा.क्षे)
लेखापरीक्षा

संपादक मण्डल की कलम से

प्रिय पाठकों...........

हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका **'चिनार ध्वनि'** के द्वितीय अंक को आप सब के सम्मुख रखते हुए हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस अंक के प्रकाशन तक पहुँचने में हमें अपने कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग मिला और आशा है कि आगे भी सहयोग मिलता रहेगा।

हिंदी भाषा को हमारे देश में वह स्थान नहीं मिला है जिसकी यह हकदार है। भाषा कभी ऊँची अथवा नीची नहीं होती है। भाषा एक समाज की संस्कृति एवं विकास का मूल तत्व होती है। आज कई देश अपनी मातृभाषा में ही विज्ञान की किताबों का प्रकाशन कर आगे बढ़ रहे हैं। इसमें चीन, रूस, जापान आदि देश हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा को विदेशी भाषा से अधिक सम्मान दिया और विकास किया। हम भारतवासियों को भी आत्म-सम्मान के साथ अपने देश की भाषा का विकास करना चाहिए। हमारा देश इतना विशाल है कि इसमें सैकड़ों भाषाएं बोली जाती हैं। इन सभी भाषाओं को तो राजभाषा नहीं बनाया जा सकता किंतु जो भाषा अधिकांश लोगों को समझ में आती है, वह भाषा हिंदी है। इसीलिए, संविधान निर्माताओं ने चाहे वे किसी भी प्रांत के रहे हों, हिंदी का समर्थन किया। हमें संविधान निर्माताओं की आकांक्षाओं एवं भारत के आत्म-सम्मान के लिए हिंदी के विकास में पूर्ण सहयोग प्रदान करना चाहिए।

इसी क्रम में, इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अथक प्रयासों के मूर्त स्वरूप माँ भारती को हिंदी पत्रिका **'चिनार ध्वनि'** के रूप में श्रद्धांजलि है।

अंत में सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को **'चिनार ध्वनि'** के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देते हुए पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप सभी अपने बहुमूल्य विचार एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें।

गृह-पत्रिका **'चिनार ध्वनि'** उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ समर्पित है।

सम्पादक मण्डल

'डल एक अहसास

श्रीमती इला सिंह
प्रधान महालेखाकार

मैं हूँ हिमगिर की गोद में पली
मेरी सखी मन भावन पवन
यही गवाह है मेरे तट पर सुशोभित
हज़रत बल का मान
एवं शंकराचार्य का ज्ञान
क्यूं ना इतराऊँ और खुशियाँ मनाऊँ मैं

हर प्रातः आदित्य की अनुपम आभा
दिखाए मुझे बादलों का दृश्य
वहीं हर शाम जब मैं थकती हूँ
तो सितारों का चमचमाता आँचल
समझाए मुझे चाँद का रहस्य

मुझ में समाओ मुझ से निखरो
रंगीन शिकारों अपने जीवन को जानो
सब कुछ शांत है, स्थिर है
व्यस्त है यहाँ सब चिड़ियों की टोली
मधुर धुन सुनने और सुनाने में स्थिर है सक्षम वृक्ष

इस मधुरतम नज़ारे को अपने में
संजोए हुए
हर सुबह और शाम है गूँजती
मंगलमय मस्जिद की अज़ान से
वहीं पर हर मंगलमय दिन निखरता
मंदिरों की अर्चना से

फिर क्या है वो, जो नज़र नहीं आता
न तो सुनाई देता, न महसूस होता
लेकिन है वो यहीं कहीं छुपा-सा
हर इंसान के दिल में,
किंतु दूर है बहुत ज़ुबान से

स्थित है वो केवल मस्तिष्क में
क्या है वह यकीन नहीं होता
अपने में झांको, देखो और परखो
जो न होते हुए भी... है

जो इस बेहतरीन वातावरण
पर काले घने बादलों सा छाया
डल में पूर्णतः समाया
हम सब को एक दूसरे से भगाए
हाँ वही तो है......................भय

वो भय चाहे कोरोना का हो
या कर्फ्यू का
ये भय ही है, जो है तो हम में
जो इस स्वछंद डल के
मधुरतम वातावरण से विछंद रखता

हमे अपने हाल से असंतुष्ट बनाए
क्यों नहीं है हमें विश्वास अपने मन पर
वो मन जो हमको हमसे ही मिलाए
उन नाउम्मीदों के बादलों को भगाए

डल को दूषित करते राक्षसों को भगाएं
और डल का जीवन जो कि
एक स्वच्छ, निर्मल, सरल,
पारदर्शिता के साथ
हम सब इंसानों के मन में बस जाए

डल का विश्वास ही हमें वो सबक सिखाए
हे इंसान ! यदि मैं अपने वास्तविक
रूप में तुम्हें बेहतरीन कमल का फूल दिखाती हूँ,
तो वहीं मैं अपने रौद्र रूप में तुम सबको मिटाती हूँ
आओ आज से हम सब डल के जीवन से सीखें

प्रकृति के साथ पलें, बढ़ें और उसे
निहारें लेकिन यकीनन विश्वास
रखना ए इंसान ! इस डल के जीवन पर
कोई अपनी बुरी नज़र न डाले।

टिप्पणी:- 'डल' श्रीनगर (जम्मू एवं कश्मीर) की एक प्रसिद्ध झील है।

महान संत 'कबीर'

श्री जयप्रकाश
उप महालेखाकार

भारत भूमि पर जन्म लेने वाली महानतम विभूतियाँ बुद्ध, महावीर, गोरख, नानक, रैदास, दादू, गाडगे इत्यादि भारतीय समाज को प्रकृति की अनमोल देन है। इन लोगों ने अध्यात्म के उच्चतम शिखर को तो छुआ ही, समाज व्यवस्था की तह में प्रवेश कर उसमें व्याप्त बुराइयों को परिष्कृत करने का अनूठा प्रयास किया। इनमें से एक है महान् संत कबीर जिसका जन्म रहस्य, जीवन रहस्य और मृत्यु भी रहस्यपूर्ण है। यद्यपि इनका जन्म सन् 1398 ईस्वी में काशी में हुआ माना जाता है, तथापि इस संबंध में अनेक किंवदंतियाँ हैं, पर कबीर पन्थियों की मान्यता है कि कबीर का उदय काशी में लहरतारा तालाब में उत्पन्न कमल के मनोहर पुष्प से हुआ। इनके जन्मस्थान के संबंध में तीन मत हैं, काशी, मगहर और आजमगढ़ में बेलहरा गाँव। मगहर के पक्ष में यह तर्क दिया जाता है कि कबीर ने अपनी रचना में वहाँ का उल्लेख किया है। वे काशी के जुलाहे के रूप में ही जाने जाते हैं। किंतु किसी प्रमाण के अभाव में निश्चयात्मकता नहीं बन पाती है। बहुत से लोग आजमगढ़ ज़िले के बेलहरा गांव को कबीर साहब का जन्मस्थान मानते हैं। वे कहते हैं कि बेलहरा ही बदलते-बदलते लहरतारा हो गया। वैसे कबीर का अधिकांश जीवन काशी में व्यतीत हुआ। स्वयं संत कबीर ने कहा है **"हम कासी में प्रकट भये हैं"** जो इन मतान्तरों पर विराम लगाता है।

संत कबीर के माता-पिता के विषय में भी एक निश्चित मत नहीं है। नीमा और नीरु जुलाहा की कोख से यह अनुपम ज्योति उपजी थी, या लहरतारा तालाब के समीप विधवा ब्राह्मणी की संतान के रुप में, ठीक तरह से कहा नहीं जा सकता। कुछ का मत यह है कि नीमा और नीरु ने केवल इनका पालन-पोषण ही किया था। एक जगह कबीर ने खुद कहा है

"जाति जुलाहा नाम कबीरा, बनि-बनि फिरो उदासी।"

संत कबीर का लालन-पालन जुलाहा परिवार में हुआ था, इसलिए उनके मत का महत्वपूर्ण अंश यदि इस जाति के परंपरागत विश्वासों से प्रभावित रहा हो तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। यद्यपि 'जुलाहा' शब्द फारसी भाषा का है तथापि इस जाति की उत्पति के विषय में संस्कृत पुराणों में कुछ-कुछ चर्चा मिलती है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में बताया गया है कि म्लेच्छ पिता और कुविंद माता से जो संतति उत्पन्न हुई वही जुलाहा कहलाई। जुलाहे मुसलमान हैं, पर इनमें अन्य मुसलमानों से मौलिक भेद हैं। जिस तरह कबीर इस जुलाहा-जाति को अलंकृत कर रहे थे, ऐसा जान पड़ता है कि इस जाति ने अभी एकाध पुश्त से ही मुस्लिम धर्म ग्रहण किया था। उत्तर भारत के वयनजीवियों (बुनकरों) में कोरी मुख्य हैं। बेन्स जुलाहों को कोरियों की समकक्ष जाति ही मानते हैं। कुछ लोगों का यह भी अनुमान है कि मुस्लिम धर्म ग्रहण करने वाले कोरी ही जुलाहे हैं। कबीर अपने आप को बार-बार जुलाहा कहते हैं-

(1) जाति जुलाहा मति कौ धरि। हरषि गुन रमै कबीर।
(2) तू ब्राह्मन मैं काशी का जुलाहा।

ऐसा जान पड़ता है कि यद्यपि संत कबीर के युग में जुलाहों ने मुस्लिम धर्म ग्रहण कर लिया था पर साधारण जनता में तब भी कोरी नाम से परिचित थे। संत कबीर ने अपने को जुलाहा तो कई बार कहा है, पर मुसलमान एक बार भी नहीं कहा। वे आध्यात्मिक सत्य के अतिरिक्त सामाजिक तथ्य की ओर भी बार-बार इशारा कर रहे हैं। उन दिनों वयनजीवी नाथ-मतावलंबी गृहस्थ योगियों की जाति सचमुच ही न हिंदू थी और न ही मुसलमान। संत कबीर ने एक पद में स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि हिंदू और हैं, और योगी और हैं, क्योंकि योगी या जोगी गोरख-गोरख करता है, हिंदू राम-राम उच्चारता है और मुसलमान खुदा-खुदा कहा करता है।

इनका का नाम कबीरदास, कबीर साहब एवं कबीर जैसे रूपों में भी प्रसिद्ध है। उस काल में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं थी जो उनको कबीरा नाम से भी पुकारते थे। वाराणसी और आस–पास के क्षेत्र में किसी के नाम के आगे 'आ' या 'वा' लगाने का मतलब हैं उसको अपने से नीचा अथवा छोटा मानना । होली के अवसर पर इस क्षेत्र में गाये जाने वाले 'कबीरा' गीत पर गौर करने पर यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित होता है कि तत्कालीन कुलीन समाज उन्हें किस दृष्टि से देखता था । ये मध्यकालीन भारत के स्वाधीनचेता महापुरुष थे और उनका परिचय, प्राय: इनके जीवनकाल से ही एक साधक, कवि, मतप्रवर्त्तक तथा समाज सुधारक मानकर दिया जाता रहा है।

कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। वह अपनी अवस्था के बालकों से एकदम भिन्न रहते थे और उनकी खेल में कोई रुचि नहीं थी। शायद मदरसे भेजने लायक साधन इनके माता-पिता के पास नहीं थे। जिसे हर दिन भोजन के लिए ही चिंता रहती हो, उस पिता के मन में कबीर को पढ़ाने का विचार भी न उठा होगा। यही कारण है कि वे किताबी विद्या प्राप्त न कर सके। वह खुद कहते हैं "मसि कागद छुवो नहीं, कलम गही नहीं हाथ।'' उन्होंने स्वयं कोई ग्रंथ नहीं लिखा, उन्होंने केवल मुँह से बोल बोले और उनके शिष्यों ने उसे याद कर लिया जो बाद में बीजक के नाम से संकलित हुआ। इसके तीन भाग हैं- साखी, सबद और रमैनी। कबीर की भाषा भी उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा और उनके समाज के अनुरूप ही है। यह न हिंदी न अवधी और न ही भोजपुरी है बिल्कुल आम बोलचाल की भाषा है। शायद उनकी भाषा के कारण भी उस समय का तथाकथित सभ्य समाज उनकी आलोचना करता था। पर समाज के निचले तबके में उन्हें पूरा सम्मान मिला। गौतम बुद्ध की तरह वह कुलीन समाज से नहीं आते थे इसलिए उन्हें उच्च वर्ग का साथ नहीं मिलता था। उनकी भाषा, उसी तरह से लट्ठमार है जैसे वह कहते हैं "कबीरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाटी हाथ।" वह उसी भाषा का प्रयोग करते हैं जिसे उनके अनुयायी समझते हैं। पर आज उनके अनुयायी साधारण जन, उच्च शिक्षित और गहन आध्यात्मिक चिन्तक तीनों तरह के लोग हैं जो अपनी क्षमता के हिसाब से उनके दोहों का अर्थ निकालते हैं। यह भी एक रहस्य ही है कि जिस व्यक्ति ने कभी कागज-कलम नहीं छुआ और शिक्षित समाज ने कभी उसका साथ नहीं दिया उसके जीवन और रचनाओं पर शोध-प्रबंध लिखकर सहस्त्रों लोगों को डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त हो चुकी है ।

यह माना जाता है कि कबीर का विवाह वनखेड़ी बैरागी की पालिता कन्या लुई के साथ हुआ था। कबीर को कमाल और कमाली नाम की दो संतान भी थी। उनका पूरा परिवार संतों का एक कुनबा था और सभी सदस्य एक से बढ़ कर एक संत थे। कबीर के पुत्र कमाल भी एक पहुंचे हुए संत थे पर उनके मत के विरोधी थे। यही कारण है कि वे परिवार से अलग झोंपड़ी लगा कर रहते थे। उन्होंने कभी विवाह नहीं किया क्यों कि हर स्त्री में उनको माँ, बहन या बेटी ही नजर आती थी। इसलिए कहावत है कि -

डूबा वंश कबीर का, उपजा पूत कमल।

यद्यपि कबीर की पुत्री कमाली का उल्लेख उनकी बानियों में नहीं मिलता है। कुछ लोगों द्वारा कबीर को बाल-ब्रह्मचारी और वैरागी माना जाता है। इस मत के अनुसार कमाल उनका शिष्य और कमाली तथा लोई उनकी शिष्या थी। 'लोई' शब्द का प्रयोग कबीर ने एक जगह कंबल के रुप में भी किया है। पर वस्तुतः कबीर की पत्नी और संतान दोनों थे। यह हो सकता है कि पहले लुई पत्नी रही होंगी, बाद में कबीर ने उन्हें शिष्या बना लिया हो। उन्होंने कहा है-

नारी तो हम भी करी, पाया नहीं विचार। जब जानी तब परिहरि, नारी महा विकार।

संत कबीर के गुरू के बारे में भी किंवदंतियाँ है। कहा जाता है उस समय काशी में **रामानंद** नाम के एक महापुरुष रहते थे। युवा कबीर ने उनसे अपना शिष्य बनाने का आग्रह किया था। उस समय जात-पाँत का आडम्बर तो था ही और फिर काशी, वहाँ पण्डितों और पंडों का बहुत अधिक प्रभाव था। कबीर जी गंगा के घाट पर उनके जाने के रास्ते में सुबह के अन्धेरे में लेट गये। गुरु महाराज आये तो अन्धेरे के कारण कबीर जी के ऊपर उनका पैर पड़ गया। उनके मुख से निकल पड़ा राम, राम, राम। इस तरह कबीर जी को गुरुमंत्र का जप करते हुए साधना करने लगे। जब पण्ड़ितों ने कबीर से पूछा कि "रामनाम की दीक्षा तुमको किसने दी, तो उन्होंने बता दिया कि स्वामी रामानन्दजी महाराज के श्रीमुख से मिली"। फिर वे लोग रामानन्द जी के पास पहुँचे और कहा कि आपने कबीर को राममंत्र की दीक्षा देकर इस मंत्र को और सम्प्रदाय को भ्रष्ट कर दिया। रामानंद ने कहा कि मैंने तो दीक्षा नहीं दी। तब पंडितों ने बताया कि वह जुलाहा तो आपका ही नाम बदनाम कर रहा है। तब रामानन्द ने कहा कि उसको बुलाकर पूछा जाय सब पता चल जायेगा।

काशी के पण्डित इकट्ठे हो गये और कबीर जी को बुलाया गया। गुरु महाराज मंच पर विराजमान हुए और सामने विद्वान पण्डितों की सभा बैठी है। रामानन्दजी ने कबीर से पूछा मैंने तुझे कब दीक्षा दी। मैं कब तेरा गुरु बना कबीर जी बोले महाराज उस दिन प्रभात को आपने मुझको पादुका का स्पर्श कराया और रामनाम मंत्र भी दिया, गंगा के घाट पर। रामानन्द जी कुपित हो गये और कबीर से गरज कर बोले मेरे सामने तू झूठ बोल रहा है सच बोल। कबीर जी बोले प्रभु। आपने ही मुझे प्यारा रामनाम मंत्र दिया था। रामानन्दजी को गुस्सा आ गया और खड़ाऊँ उठाकर दे मारा कबीर के सिर पर। यह घटना महाभारत के द्रोणाचार्य और एकलव्य की कहानी से मिलती-जुलती है।

इनके जीवन काल में ही इनके नाम पर **कबीरपंथ नामक संप्रदाय** भी प्रचलित हो गया था जो आज भी है। कबीरपंथी इन्हें एक अलौकिक अवतारी पुरुष मानते हैं और इनके संबंध में बहुत-सी चमत्कारपूर्ण कथाएं भी सुनी जाती हैं। इनका कोई प्रामाणिक जीवनवृत्त आज तक नहीं मिल सका, जिस कारण इस विषय में निर्णय करते समय, अधिकतर, जनश्रुतियों, सांप्रदायिक ग्रंथों और विविध उल्लेखों तथा इनकी अभी तक उपलब्ध कतिपय रचनाओं का ही सहारा लिया जाता रहा है। फलत: इस संबंध में तथा इनके मत के भी विषय में बहुत कुछ मतभेद पाया जाता है।

संत कबीर हिंदी साहित्य के ऐसे कवि हैं, जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडंबरों पर कुठाराघात करते रहे। वह कर्म प्रधान समाज के पैरोकर थे और इसकी झलक उनकी रचनाओं में साफ झलकती है। वे अपने जीवन यापन के लिए बुनकर का काम आजीवन करते रहे। पर लोक कल्याण हेतु ही उनका समस्त जीवन समर्पित था। कबीर को वास्तव में एक सच्चे जीव-प्रेमी का अनुभव था। कबीर की सबसे बड़ी विशेषता उनकी प्रतिभा में अबाध गति और अदम्य प्रखरता थी। समाज में कबीर को जागरण युग का अग्रदूत कहा जाता है। लगभग चार हजार साल पूर्व से व्याप्त विकृत समाज व्यवस्था पर तथागत गौतम बुद्ध के कुठाराघात से उसके पोषक अभी, संभले ही नहीं थे कि मुगल काल आ गया। इस काल खंड में भी इस व्यवस्था पर काफी प्रहार हुआ। इस नयी

व्यवस्था रूपी वृक्ष के नीचे भी पीड़ित लोगों ने शीतलता महसूस की और उसकी शरण में आये। लेकिन यह वृक्ष भी उनको तपिश से पूरी तरह सुरक्षा न प्रदान कर सका। ऐसे समय में ही इस महान् संत का अवतरण हुआ। संत कबीर के जन्म के समय में भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक दशा शोचनीय थी। एक तरफ धर्मांधता से जनता परेशान थी और दूसरी तरफ कर्मकांड, विधान और पाखंड से मानवता का ह्रास हो रहा था। जनता में मानवता की भावनाओं का सर्वथा अभाव था और पाखंडपूर्ण वचन समाज में फैले थे। अपरिवर्तनीय समझी जाने वाली जाति-व्यवस्था को जबरदस्त ठोकर लगी थी। सारा भारतीय वातावरण क्षुब्ध था। बहुत से पंडितजन इस संक्षोभ का कारण खोजने में व्यस्त थे और अपने-अपने ढंग से भारतीय समाज और धर्म मत को सम्भालने का प्रयत्न कर रहे थे। ऐसे संघर्ष के समय में, संत कबीर का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

कबीर सन्त, कवि और समाज सुधारक थे। उनकी कविता का एक-एक शब्द पाखंड़ियों के पाखंडवाद और धर्म के नाम पर ढोंग व स्वार्थपूर्ति की निजी दुकानदारियों को ललकारता हुआ आया और असत्य व अन्याय की पोल खोल धज्जियाँ उड़ाता चला गया। कबीर का अनुभूत सत्य अंधविश्वासों पर बारूदी प्रहार था। सत्य भी ऐसा जो अब तक के परिवेश पर सवालिया निशान बन चोट भी करता है और खोट भी निकालता है। इतना महान् संत और सिद्ध पुरुष होने के बावजूद भी, वह खुद उस समय समाज में व्याप्त जात-पाँत के आडम्बर से बच न सके थे। यह उनके एक दोहे से स्पष्ट होता है-

जाति न पूछो साधू की पूछ लीजिये ज्ञान, करो मोल तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।

संत कबीर आजीवन आडम्बर और अंध-विश्वास से लड़ते रहे और लोगों को उससे उभारने की कोशिश करते रहे। उन्होंने अपनी मृत्यु से भी लोगों को एक बड़ा सन्देश दिया। उन दिनों यह मान्यता थी कि जो काशी में देह त्याग करता है वह सीधे स्वर्ग जाता है और जो मगहर में मरता है वह नरक में जाता है। मगहर उत्तर-प्रदेश के आधुनिक संत कबीर नगर जिले में पड़ता है। इस अन्धविश्वास से लोगों को निकालने के लिए अपने अंत समय में वह काशी छोड़कर मगहर चले गए और वहीं देह त्याग किया। मगहर में कबीर की समाधि है। जन्म की भाँति इनकी मृत्यु तिथि एवं घटना को लेकर भी मतभेद हैं किन्तु अधिकतर विद्वान उनकी मृत्यु संवत् 1575 विक्रमी (सन् 1518 ई.) मानते हैं। लेकिन बाद के कुछ इतिहासकार उनकी मृत्यु 1448 को मानते हैं। यह भी किंवदंती है कि उनकी मृत्यु के बाद अंतिम क्रिया पर उनके अनुयायियों, जो हिन्दू ओर मुसलमान दोनों थे, में विवाद उत्पन्न हो गया था। हिन्दू लोग उनके पार्थिव शरीर को जलाना चाहते थे और मुसलमान लोग दफनाना। परन्तु जब कफ़न उठाया गया तो उनके मृत शरीर के स्थान पर फूल मिले। फूल को दोनों मतावलंबियों ने आपस में बाँट लिया था और अपने विश्वास के अनुरूप अंतिम संस्कार किया। पर इस कहानी पर भी संदेह है, क्योंकि इस क्षेत्र के सारे कबीरपंथियों की लाश आज दफ़न ही की जाती है।

युवा की अपेक्षा

डॉ अजीत कुमार,
उप महालेखाकार (पेन्शन)

खुद को इतना भी मत बचाया कर,
बारिशों में कभी-कभी तो भीग जाया कर।
काम ले कुछ हसीन होठों से ,
बातों-बातों में कभी एक बार तो मुस्कुराया कर।
चाँद लाकर कोई नहीं देगा तुझे,
अपने चेहरों से भी तो कभी जगमगाया कर।
धूप मायूस हो कर लौट जाती है,
कभी तो छत पर कपड़े सुखाने आया कर।
कौन कहता है दिल मिलाने को ,
कम से कम हाथ तो मिलाया कर।
माना समस्याएं बहुत है जिंदगी में,
लेकिन कभी-कभी मुझे भी तो समझाया कर।

हिंदी के मायने

सुश्री पूनम शर्मा
वरिष्ठ अनुवादक

हिंदी का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान।

हिंदी में काम, करेगा राष्ट्र निर्माण।

हिंदी मातृभाषा, जीने की आशा।

हिंदी की प्रगति, देश की प्रगति

जग में नहीं कोई ऐसा राष्ट्र,
स्वभाषा त्याग किया हो जिसने विकास।

जब राष्ट्र है एक
फिर भाषा पर क्यों मतभेद।

हमारी स्वतंत्रता कहाँ है, राष्ट्रभाषा जहाँ है।

हिंदी का उद्देश्य, देश रहे एक।

राष्ट्र भाषा में करो काम

तभी मिलेगा जग में सम्मान।

करो सब भाषाओं का सम्मान
किंतु भूलो ना हिंदी का स्थान।

कोरोना काल की कहानी–स्वास्थ्यकर्मी की जुबानी

श्री हरकेश मीना
सहायक लेखा अधिकारी

कट रही है ज़िंदगी जैसे जी रहे हो वनवास में
हम तो स्वास्थ्यकर्मी हैं साहब! ड्यूटी करना है हर हाल में
हम तड़पते हैं ड्यूटी पर परिवार चिंतित है गाँव में
जिंदगी मानो ठहर-सी गई है, बेड़ी जकड़ी जैसे पाँव में
सब विभागों में छुट्टी हो गई, स्वास्थ्य ने पकड़ी रफ्तार
ताला लगाकर लोग कह रहे, बैठा कर पैसा देती है सरकार
घरों में राशन नहीं, फिर भी ड्यूटी क्यों जाते हो ?
यहाँ सब-कुछ मिल रहा, झूठ बोलकर माँ को समझाते हैं।
देश के लिए समर्पित जीवन, इसलिए ड्यूटी जाते हैं।
हम तो स्वास्थ्यकर्मी हैं साहब! अपनी ड्यूटी निभाते हैं।
हम तो स्वास्थ्यकर्मी हैं साहब, अपनी ड्यूटी निभाते हैं।

'ट्रांसफर'-एक अनुभव

सुश्री पूनम शर्मा,
वरिष्ठ अनुवादक

'ट्रांसफर' शब्द का यदि शब्दकोष में अर्थ देखेंगे तो आपको इसके कई अर्थ मिलेंगे जैसे कि अंतरण, स्थानांतरण, हस्तांतरण आदि किंतु इसके अर्थ के सही मायने केवल एक सरकारी कर्मचारी ही बता सकता है, क्योंकि 'ट्रांसफर' नामक परिस्थिति से उसको कभी न कभी दो चार होना ही पड़ता है और ट्रांसफर आमतौर पर किसी कर्मी की इच्छा के विरूद्ध ही होता है और इसके बाद तो उस पर क्या-क्या बीतती है, यह केवल वही बता सकता है। कई बार तो यह एक धमकी के हथियार के रूप में भी लिया जाता है जैसे कि 'यह काम न हुआ तो तुम्हारा ट्रांसफर निश्चित है'। मैं भी एक सरकारी कर्मचारी हूँ और आज क्योंकि इस अनुभव से अच्छी तरह वाकिफ़ भी हूँ तो अपनी आप बीती लिखने में सक्षम हूँ।

वर्ष 2012 में दिल्ली में केंद्र सरकार के कार्यालय का हिस्सा बनने के उपरांत मैंने यह मान लिया था कि अब तो सेवानिवृत्ति भी इसी कार्यालय से होगी। वर्ष 2012 से 2017 तक का समय सामान्य रहा। कार्यालय से घर आना, घर से कार्यालय जाना बस यही सिलसिला चल रहा था। जिंदगी एक ही ढर्रे पर चल रही थी। वही मैं, वही मेरा कार्यालय, वही अनुभाग, वही अनुभाग के मेरे सहकर्मी। कभी-कभी तो सच कहूँ, बोरियत भी होने लगी थी इस दिनचर्या से, लेकिन सब ठीक ही चल रहा था और जब व्यक्ति अपने घर पर होता है तो सब ठीक ही होता है। किंतु कभी-कभी अनायास ही, ख्याल भी आता था कि, क्या वही लोग, वही ऑफिस, वही मैं, वही तुम, सरल शब्दों में कहूँ तो नीरसता का आभास भी होने लगता था। कभी-कभी तो यह भी ख्याल आता था कि काश! किसी पहाड़ी क्षेत्र में ट्रांसफर हो जाता तो क्या बात थी। खूबसूरत वादियों में जिंदगी आराम से कटती, सुंदर नज़ारे दिखते सो अलग, कभी तो मन करता कि काश! समुद्रीय स्थल पर ही ट्रांसफर हो जाता तो समुद्र की लहरों को निहारते रहते। बस ऐसे ही अनायास ऐसे ख्याल आ जाते थे। फिर जब इन ख्यालों से बाहर आती तो लगता कि अच्छा ही है कि अपने गृह निवास में ही हैं क्योंकि नए स्थान में नए सिरे से सब बंदोबस्त करना पड़ता है सब कुछ फिर से जुटाना पड़ता है, परेशानियाँ हैं सो अलग, तो अंत में यह निष्कर्ष निकला कि नहीं भैया! पहाड़, समुद्र तो सब ठीक है इनको तो छुट्टी लेकर देखने जाया जा सकता है लेकिन अपना घर तो अपना ही होता है। बस इसी उधेड़बुन में समय का पहिया घूमे जा रहा था। एक ही कार्यालय में छह वर्ष होने जा रहे थे। वर्ष 2017 का मध्य आते-आते कुछ सुगबुगाहट-सी होने लगी थी कि मुख्यालय कार्यालय में नई ट्रांसफर पॉलिसी बनने वाली है, सभी अपने स्थानों से उखाड़ दिए जायेंगे, लेकिन न जाने क्यों मुझे यह मात्र कयास ही लगे। यूँ लगा कि शायद ये अफवाह ही है, ऐसा कुछ होगा नहीं, कर्मचारियों को डराने का प्रयास किया जा रहा है। समय बीतता चला गया, जब कुछ हलचल नहीं हुई तो लगा कि बस लोगों को खबर उड़ाने के अलावा कुछ आता नहीं है। खैर, मैं इस चिंता से बेफिक्र हो गई। कुछ दिनों में तो मस्तिष्क से निकल भी गया कि ट्रांसफर का कुछ मुद्दा उठा भी था, मैं अपने काम में पुनः व्यस्त हो गई। तभी एक दिन अचानक मुख्यालय कार्यालय से पत्र आया जिसमें हमारे काडर से संबंधित कार्मिकों को देश के 50 शहरों में से ट्रांसफर हेतु चॉइस ऑफ स्टेशनों को भरकर 15 दिनों के भीतर मुख्यालय कार्यालय में भिजवाना था।

यह देख दिल को एक आघात-सा लगा, लगा यूँ कि जो मात्र अफवाह लग रही थी वो तो सच निकली। अब क्या वास्तव में जाना पड़ेगा? 50 शहरों में से मेरी प्रथम पसंद मेरा शहर ही होने वाला था किंतु यह भी मालूम था कि अपना शहर मिलने वाला नहीं है, किंतु फिर भी अपने शहर

के अलावा प्रथम स्थान किसी और शहर को दूँ इसकी हिम्मत भी मेरे बूते की बात नहीं थी। खैर, चॉइस तो भरनी ही थी तो दे दी। उस दिन से बस उल्टी गिनती चालू हो गई इंतज़ार की।

एक लंबे अंतराल के बाद एक दिन वह पल भी आ ही गया जब मुख्यालय से ट्रांसफर का फरमान आ गया। जिंदगी 360 डिगरी घूम गई क्योंकि मेरा तबादला श्रीनगर हो गया था, दिल जैसे बैठ-सा गया, अब क्या होगा? श्रीनगर एक ऐसा स्थान है जो सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील है और मेरा ट्रांसफर वहाँ हो गया था। घर वालों पर भी जैसे वज्रपात-सा हो गया। पिताजी भी चिंता ग्रस्त हो गए कि उनकी पुत्री अकेली कैसे जाएगी वो भी ऐसे स्थान पर जो सुरक्षा की दृष्टि से ठीक नहीं है। फिर क्या था सोच विचार का दौर शुरू हो गया, शोकग्रस्त माहौल हो गया घर का। घर आने वाले सांत्वना देकर जाने लगे और साथ ही साथ सलाहों का दौर भी चल पड़ा। कोई कुछ कहे, तो कोई कुछ। दिन और रात मानो एक ही चिंता ने घेर रखा था अब क्या होगा? अगला सिलसिला शुरू हुआ ट्रांसफर को रूकवाने का, मुख्यालय के चक्कर लगाने का। कोई ऐसा अधिकारी न बचा जिससे संपर्क न साधा गया या जिसका द्वार न खटखटाया गया हो। पत्र लिखने के विकल्प को भी अपनाया अपनी हर व्यथा लिख दी पत्र में, कि न भेजो परदेस में। हर पत्र का उत्तर नकारात्मक ही रहा और मुख्यालय का उत्तर किसी सख्त प्रिंसीपल की भांति एक पंक्ति में किसी फरमान कि तरह आया कि तुरंत नए कार्यालय को 15 दिनों के भीतर ज्वॉइन करें। मन मसोस कर माथा पीटकर रह गई। बात बस इतनी है कि परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है किंतु परिवर्तन को आसानी से स्वीकार न करना भी तो मनुष्य की प्रकृति है। कोई भी मनुष्य अपनी जगह को छोड़ना नहीं चाहता। बहरहाल, सभी दरवाज़ों पर विफलता मिलने के पश्चात ये मान लिया था कि अब कुछ होने वाला नहीं है और जाना ही होगा अपने नए गंतव्य पर, नए स्थान की शंकाओं की उधेड़बुन में मन भारी हुआ जा रहा था। आखिरकार, मैंने अपने आप को मानसिक रूप से तैयार किया और अपने वर्तमान कार्यालय से कार्यमुक्ति आदेश के साथ अश्रुपूर्ण विदाई ली और फिर तैयारी शुरू हो गई नए शहर जाने की। क्या रखूँ? क्या छोडूँ? कैसे करूँ? वहाँ जाकर कहाँ रहूँ? जाने कैसे लोग होंगे वहाँ? यह वो सब बातें हैं जो स्थानांतरित हुए प्रत्येक कर्मी के मन में आती ही हैं। खैर 10 दिन बस इसी उधेड़बुन में गुज़रे और अंततः 11वें दिन पिताजी के साथ अपने नए कार्यालय में पहुँच गई और कार्यभार ग्रहण किया।

नए कार्यालय का माहौल पुराने कार्यालय से बहुत अलग था। कुछ समय लगा माहौल में ढलने में लेकिन अंततः अपने आप को ढाल ही लिया नए वातावरण में, इसमें कोई दो राय नहीं कि ट्रांसफर से सब बचना चाहते हैं, जहाँ घर है, वहीं बसे रहना चाहते हैं, क्योंकि अपना घर छोड़ने में सभी को दिक्कत होती है किंतु ट्रांसफर का सिर्फ नकारात्मक ही नहीं अपितु सकारात्मक पहलू भी है। नए स्थान में जाने से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है, हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है और यह बात भी सही है कि ट्रांसफर का भूत उसी को डराता है जिसने कभी ट्रांसफर झेला न हो, जो इससे पहले ही दो चार हो चुका हो फिर उसके लिए यह साधारण बात होती है। मेरे एक उच्च अधिकारी ने कहा था कि 'जब तक हम ट्रांसफर-ट्रांसफर सुनते हैं तब तक ही उससे डरते रहते हैं जब उसको एक बार झेल लेते हैं फिर वह उतना भयावह नहीं रहता' और मेरे मामले में यह बात काफी हद तक सही निकली। आज इस नए स्थान में दो वर्ष भी हो गए हैं और यह दो वर्ष कैसे निकल गए पता भी नहीं चला। तो कुल मिलाकर यह अनुभव कुछ सिखा गया, आत्मविश्वास जगा गया और मैंने अपने इस अनुभव से यह सीखा कि जिन चीज़ों से हम भागना चाहते हैं, असल में वो हमें और भगाती हैं, डराती हैं और जिनका हम डटकर सामना करते हैं, वो हमें मज़बूत बनाती हैं और यही मज़बूती हमें भविष्य में आने वाली परिस्थितियों से लड़ने का संबल देती है।

मशालें

श्री इश्तियाक
डाटा प्रोसेसर

जब तेरी खुशबू लेकर आती है नसीम
अंबरों ऊद लहराती है फिजाओं में,

ए-मौज-ए तसनीम मशालें दिले शोक
मेहताब हो तुम तारों की पनाह हूँ।

मेरे महबूब मैं तेरा कुछ भी नहीं
मेरा जीवन फिर भी तुझको अर्पण कर दूं

उठाकर पथ के काँटे अपनी पलकों से
कह दे कि दिल जला के रोशनी कर दूं।

तुम

श्री शफी मोहम्मद मीर
वरिष्ठ लेखाकार (सेवानिवृत्त)

तुम, कुछ इस प्रकार
मेरे व्यंग्य रूप के लटकते
रिक्त फ्रेम में स्वयं को टंगा गई
कुछ आवृत्त, कुछ अनावृत्त

निःश्वास क्षणों में अपलक देखता हूँ
आशाओं भरी आशा बहु भावमयी
स्मृति की भीड़ में, सहसा दृष्टिकोण बन गया
साकार-विमल
और फिर न व्यंग्य रूप था

न फ्रेम था
न शयनायल था
न मैं था
केवल तुम
तुम ही तुम

बचपन के दिन

सुश्री पूनम शर्मा
वरिष्ठ अनुवादक

वो शरारतों से भरे पल
मस्त मौला रात दिन
हंसी ठिठौला दोस्तों के संग
करते सबकी नाक में दम
ऐसे थे बचपन के वो दिन

टी.वी. से नज़दीकी
किताबों से दूरी
भविष्य की न चिंता, न कोई फिक्र
बस आज में जीता बचपन
ऐसे थे बचपन के वो दिन

वो स्कूल से छुट्टी की अपार खुशी
खेल कूद असीम
वो दोस्तों से लड़ना-झगड़ना,
पल में गुस्सा, पल में मिलन
ऐसे थे बचपन के वो दिन

एक बसंत को आना ही होगा

श्री विक्रम बादल
आँकडा प्रविष्टि प्रचालक

एक बसंत को तो आना ही होगा
सर्द रेखायें जो मेर चेहरे पर खिंची हैं
और सूखा-सा तन जो
अभी भी वर्षो से पतझड़ को मिला है
इनको बदलना ही होगा
एक बसंत को आना ही होगा।

बंजर भूमि पर जो तिनके-से खिले हैं
शायद कभी दस्तक-सी आई थी
पर उदास रंग देख पश्चिम को चली गई
पूरब ने बेरुखी को तान जो छेड़ा था
अनजान मरु भूमि के वो रेतीले टीले
और मैं भटका-भटका सा

पर आशा जो है जीने की, जाकर
खोजने उसे हिमालय तक मैं पहुँचा

हाँ, शायद मैंने ढूंढ लिया है
और क्या वो समुद्र की रेत-से पौ फटी
वहीं से हाँ वहीं से
एक बसंत को आना ही होगा।

दरवाज़ा खोल रखा है अपने मन का
और खिड़कियाँ भी सारी खोल दीं हैं मैंने
हर एक कोना साफ! किया है
अभी-अभी कुर्सी को जो साफ किया है

चादरें भी बदल दी हैं पलंग की मैंने
और रसोई भी भीनी-भीनी सौंधी खुशबू
आह! नया पकवान भी बनाया है
बस इंतजार है
और हाँ, चेहरे को साफ किया यह भी चंपाया रंग-सा
एक बसंत को आना ही होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020–आवश्यकता तथा परिवर्तन

श्री संदीप वर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

"ज्ञान ही शक्ति है। सूचना मुक्ति है। शिक्षा हर समाज में, हर परिवार में, प्रगति का आधार है।" - कॉफी अन्नान, भूतपूर्व संयुक्त राष्ट्र महासचिव

विगत 29 जुलाई 2020 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता वाली केन्द्रीय केबिनेट ने 34 वर्ष पुरानी (1986) शिक्षा नीति को बदल कर नवीन **'राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020'** को संस्तुति दे दी है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति डॉ के. कस्तुरीरंगन जी की अध्यक्षता वाली कमेटी की रिपोर्ट पर आधारित है, जिसे अपनाकर भारत ने अपने शिक्षा के इतिहास में नए अध्याय की शुरुआत की है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को अपनाने का फैसला ऐसे समय में आया है, जब सम्पूर्ण विश्व कोविड-19 जैसी महामारी से लड़ रहा है। इस वायरस जनित महामारी ने सम्पूर्ण विश्व को आत्म-परीक्षण करने तथा श्रेष्ठता के मौजूदा पैमानों में परिवर्तन करने पर मजबूर कर दिया है। विश्व ने आज महसूस किया है कि वैश्विक महाशक्ति उसे ही कहा जाएगा जो ऐसी आपदाओं से ना सिर्फ लड़ेगा अपितु पथ-प्रदर्शक भी बनेगा। ऐसे में जैविक हथियारों के इस युग में, किसी राष्ट्र के लिए मानवीय विकास के मुख्य तत्व अर्थात् शिक्षा का महत्व बढ़ जाता है।

शिक्षा किसी इंसान को सिर्फ साक्षर ही नहीं बनाती है बल्कि वैश्विक आर्थिक असमानता, गरीबी तथा कुपोषण को समाप्त करके सभी मनुष्यों को एक सम्मानित, कौशल आधारित रोजगार व सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक समानता, स्वतंत्रता एवं न्याय भी प्रदान करती है। भारत की बहुसंख्यक आबादी आज भी इन सभी चुनौतियों का सामना कर रही है तथा मूलभूत सुविधाओं यथा गुणवत्तापरक शिक्षा, स्वास्थ्य तथा बुनियादी ढ़ांचे से वंचित है। ऐसे में राष्ट्र के नीति-निर्माताओं के लिए यह अपरिहार्य हो जाता है कि शिक्षा के स्तर तथा गुणवता को सुधारा जाए। अब सवाल यह उठता है कि नवीन शिक्षा नीति की आखिर आवश्यकता क्या है तथा इसमें कौन से महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं।

वर्तमान में भारतीय शिक्षा तंत्र कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियों जैसे शिक्षा की असमान पहुंच, गुणवत्तापरक शिक्षा का अभाव, उत्तरादायित्व के अभाव तथा सामाजिक पिछड़ेपन से उपजी समस्याओं आदि का सामना कर रहा है। आजादी के सात दशक बीतने के बाद भी भारत में महिला तथा पुरूष साक्षरता दर में 16.6 प्रतिशत जैसा बड़ा अन्तर बना हुआ है। बालिका साक्षरता तथा विद्यालय में नामांकन दर, बालकों की तुलना में कम है। देश के दूर-दराज तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों का अभाव है। जहाँ विद्यालय बन भी गए हैं वहाँ बुनियादी शैक्षणिक सुविधाओं जैसे कक्षा-कक्ष की कमी, ब्लैक-बोर्ड, मेज-कुर्सी के साथ-साथ प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है। विभिन्न प्रयासों के बावजूद माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा स्तर में न्यून नामांकन दर चिंता का कारण है। आज भी बड़ी संख्या में बच्चे विभिन्न समस्याओं की वजह से स्कूल छोड़ देते हैं।

नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति, वर्तमान चुनौतियों के दृष्टिगत वैश्विक ज्ञान आधारित तथा आमूल-चूल

परिवर्तन कारक हैं। नीति का प्रमुख उद्देश्य सभी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्तापूर्ण, सुगम, समान तथा उत्तरदायित्वपूर्ण शिक्षा मुहैया कराना है। यह शिक्षा नीति संयुक्त राष्ट्र के **'सतत् विकास लक्ष्य 4'-** गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से संबंधित है। यह नीति भारत को स्कूल व कॉलेज दोनों ही स्तरों पर 21 वीं सदी की आवश्यकता के अनुरूप समग्र, लचीला एवं बहु आयामी बनाकर एक जीवंत ज्ञानशील समाज और वैश्विक महाशक्ति बनाएगी तथा नीति प्रत्येक छात्र-छात्रा की अद्वितीय क्षमताओं को सामने लाने के लिए कटिबद्ध है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख उद्देश्यों में वर्ष 2030 तक प्री-स्कूल से माध्यमिक स्तर तक 100 प्रतिशत सकल नामांकन दर हासिल करना तथा 2 करोड़ ऐसे विद्यार्थियों को मुख्यधारा में लाना जो स्कूल छोड़ चुके हैं, प्रमुख हैं। उच्च शिक्षा स्तर पर पाठ्यक्रम को अधिक लचीला बनाना जिसमें संकाय शिक्षा से इतर अन्य विषयों को चुनने की छूट भी प्राप्त होगी। विद्यार्थियों को प्राथमिक स्तर तक अपनी स्थानीय भाषा में शिक्षा दी जाएगी तथा कक्षा छह के स्तर से ही व्यावसायिक शिक्षा तथा इंटर्नशिप प्रदान करना प्रस्तावित है। विद्यार्थियों की आधारभूत साक्षरता पर बल देते हुए नवीन 5+3+3+4 (12 वर्ष) विद्यालयी शिक्षा तथा प्रारम्भिक तीन वर्ष तक आँगनवाड़ी/ प्री-स्कूलिंग के सूत्र को अपनाया गया है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत कुशल तथा उच्च शैक्षणिक योग्यता वाले अध्यापकों के चयन हेतु **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद** विशेष पाठ्यक्रम तैयार करेगी। साथ ही साथ अध्यापकों को प्रोत्साहित किया जाएगा कि वे अध्यापन का माध्यम द्विभाषी रखें जिससे अध्यापन के माध्यम से भिन्न मातृभाषा वाले विद्यार्थियों को सुगमता से पढ़ाया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा, विश्व के टॉप 100 विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में अपने कैम्पस शुरू करने पर भी जोर देती है। हालाँकि इन 100 महाविद्यालयों का चयन कैसे होगा, इस पर स्पष्ट दिशा-निर्देशों का अभाव है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति उन सभी तत्वों का सम्मिश्रण है, जिससे शिक्षा विद्यार्थियों के लिए रूचिकर, सहज, सुगम तथा समानता के मानकों पर खरी उतरे परन्तु रंगीन शब्दों में बनी नीति को जीवंत बनाने हेतु कुछ विशेष प्रयास भी करने की आवश्यकता होगी। वैश्वीकरण के इस दौर में यह अत्यंत आवश्यक है कि विद्यार्थी तकनीक तथा समुचित बुनियादी सुविधा सम्पन्न शिक्षा हासिल करे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का छह प्रतिशत तक खर्च प्रस्तावित है। शिक्षा पर अधिक व्यय करने से विद्यार्थियों को कम्प्यूटर तथा इन्टरनेट आधारित शिक्षा प्राप्त करने में सहायता प्राप्त होगी तथा दूर-दूराज तथा ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए, अधिक सुविधा सम्पन्न विद्यालयों का निर्माण किया जा सकेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से यह भी संभव होगा कि एक सिविल-इंजीनियर अपने शिक्षा पाठ्यक्रम के साथ-साथ मानवशास्त्र जैसे विषयों की पढ़ाई कर सके। उदाहरण के तौर पर किसी क्षेत्र में बाँध बनाने वाले अभियंता को यह ज्ञान होना चाहिए कि उस विशेष क्षेत्र की सामाजिक समस्याएं क्या हैं, जिससे वो वास्तविक परिस्थितियों से भी परिचित रहे। नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रस्ताव हमारे राष्ट्र निर्माताओं की सोच को साकार करने, तथा उनके आशीर्वाद की अनुभूति कराते हैं। महात्मा गाँधी जी ने भी कहा था कि "शिक्षा से मेरा आशय बालक और मनुष्य के देह, मस्तिष्क और भावना के श्रेष्ठ तत्वों को बाहर लाने से है", यह शिक्षा नीति इस परिभाषा को अपने उद्देश्य में समाहित करती है।

वो दिन लौटकर आयेंगे

श्री अंकित कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

तालाब किनारे बैठकर पत्थरों को फेंकना
तेरा दूर, मेरा नजदीक जाना
मेरी हार और तेरा जीत जाना
कुछ मेरे कुछ तेरे वो पत्थर
पानी से वापस आ पायेंगे,
हाँ! वो दिन लौट कर आयेंगे।

साईकिल पर बैठ मेरे संग घूमना,
कुदरत को पल-पल निहारना
मंद हवा में तेरी जुल्फों का मुझसे टकराना
क्या वो पंछी देख पायेंगे,
हाँ! वो दिन लौट कर आयेंगे।।

झुकी पलकों से तेरा शर्माना
और फिर कतरों-कतरों में मुस्कुराना
हजार मुस्कान तेरी, एक मेरी
क्या धड़कते दिल सदा यूँ ही मुस्कुरायेंगे
हाँ! वो दिन लौट कर आयेंगे।।

रूठ कर तेरा मेरी बाहों में गिर जाना,
झूठ मूठ आँसू बहाना और मेरा सहलाना
एक आँसू तेरा, दो मेरे,
क्या आँखों से निकल पायेंगे
हाँ! वो दिन लौट कर आयेंगे।।

छुटपुट बातें और एक-दूजे से बिछुड़ जाना
कुछ वक्त मुँह फेर नाराज़ रहना
कोशिश कुछ कहने की, पर कुछ बोल न पाना
क्या बिछुड़े लम्हे फिर एक हो पायेंगे
हाँ! वो दिन लौट कर आयेंगे।।

पगडंडी लेकर चिकनी मेढ़ों से गुज़रना
शरारत तेरी, दोनों का कीचड़ में गिर जाना
हया तेरी और शर्म मेरी
क्या भीगे दिल संग धड़क पायेंगे,
हाँ! वो दिन लौट कर आयेंगे।।

अभिलाषाः एक वृद्ध की

श्री हरकेश मीना
सहायक लेखा अधिकारी

चाह नहीं है पुत्रों के सिर पर मैं बोझा समझा जाऊँ
चाह नहीं पुत्र वधुओं की रोज़ झिड़कियाँ मैं खाऊँ
चाह नहीं है पौत्रों की उपेक्षा का शिकार मैं बन पाऊँ
चाह नहीं अपनों की नज़रों में तिरस्कार को मैं पाऊँ
मुझे उठा लेना हे परमेश्वर! जब चल पायें न मेरे पैर
क्योंकि स्वार्थ के इस जग में आज नहीं वृद्धों की खैर।

तन्हाई

श्री संजय कुमार
आँकडा प्रविष्टि प्रचालक

जिन्दगी की दौड़ में
सब को पीछे छोड़ आया
क्या अपने क्या पराये
कामयाबी की कोशिश में
सब को गंवाया
आज जब पलट कर देखा
तो खुद को अकेला पाया
जिस महफिल में
गुजरता था सारा वक्त
अपनी यादों में आज फिर
उस महफिल को सजा पाया
वो खिले हुए चेहरे
वो दोस्तों के ठहाके
सब जस के तस थे पर उस भीड़ में
खुद को नहीं ढूँढ पाया
जिन अपनों से आगे निकलने की
कोशिश में लगा रहा 'संजय'
आज उनसे कोसों दूर
खुद को तन्हा पाया।

अनुपम सौंदर्य

श्री इश्तियाक
डाटा प्रोसेसर

मैंने देखा है तेरे रूप में
कुदरत का एक
हसीन शाहकार
शफक की लाली
चंचल मुख पर
होंठ रसीले
मधु के सागर,
मोती जैसे दांत तले
उंगली दबाये
चली आ रही है
हौले-हौले मध्यम-मध्यम
नागिन जैसी चाल चलती हुई
दस्तक दे रही थी,
मेरे दिल पर

कायाकल्प

श्री शफी मोहम्मद मीर
वरिष्ठ लेखाकार (सेवानिवृत्त)

शुभ धरा ने ली अंगड़ाई
ऋतु वसंत नव जीवन
मधुर सुधा रस-सी बरसाई
ऋतु वसंत नव जीवन लाई

मेघ घने नभ पर लहराए
प्रेम संदेशा भू पर लाए,
मनसिज की तरुणाई
ऋतु वसंत नव जीवन लाई

सुगम सुगंध समीर सजाए,
खग कुल पुलकित गीत सुनाए,
साँझ ढले लट ज्यूँ बिखराई,
ऋतु वसंत नव जीवन लाई।

दमक-दमक चपला चमकाए
कण-कण, मन-मन दीप जलाए,
वंदन कमल मुख की परछाई,
ऋतु वसंत नव जीवन लाई

झर-झर झरना बहता जाए
हिम कण आँचल ज्यूँ सरकाए
मधुरिम अलसित-सी पुरवाई,
ऋतु वसंत नव जीवन लाई

मधु मद यौवन-सी मदमाती,
देख छटा मदिरा छलकाती,
मीर ने पीर व्यथा बिसराई
ऋतु वसंत नव जीवन लाई।

म से .... माँ

श्रीमती नीलकमल सैनी
पत्नी श्री पंकज सैनी, सहायक लेखा अधिकारी

माँ मैं अब जानती हूँ,
कि माँ होना इतना आसान नहीं होता
एक माँ होने के लिए अपने शौक, इच्छायें, सपने, उम्मीदें
सबको........... भाड़ में झोंकना पड़ता है

अपने मन में उमड़ते भावनाओं के ज्वार को
ममता की नदी में ठंडा करना पड़ता है
माँ मैं जानती हूँ कि माँ होना इतना आसान नहीं होता
जाने कितनी बार अकेले गलतियाँ कर-कर के सीखना पड़ता है
जाने कितनी रातें.............. सिर्फ खुद से ही करके बातें काटनी पड़ती है

दुनिया के ताने, अपनों की हकीकतें जानते हुए भी,
सच कहने से रो-रो कर खुद को रोकना पड़ता है,
'तुम तो माँ हो, अपने बच्चों के लिए इतना तो करना ही पड़ता है
ऐसी बातें जाने कितने कर्त्तव्यविमुख लोगों से सुननी पड़ती है
दर्द का घूंट पी-पी कर, अपने दूध और रक्त से सींच -सींच कर संतान को पालना पड़ता है

माँ मैं जानती हूँ अब कि माँ होना इतना आसान नहीं होता
आत्मनिर्भर बनने की होड़ में,
आधुनिकता की इस दौड़ में,
जाने कितने चक्कर
अपने अधिकारी के चैंबर के काटने पड़ते हैं...

मैडम.......और कितनी सीसीएल लेंगी आप....?
यह सवाल सुनते ही अपने उस मज़बूत ज़मीर को एक बार
फिर झकझोरना पड़ता है
'सर प्लीज इस बार और' कहकर
अपने वजूद के बिखरे हुए टुकड़ों को समेटते हुए
चैंबर से निकलना पड़ता है

अपने बच्चों को गले लगाने के लिए
एक कौर अपने हाथ से खिलाने के लिए
हड़बड़ाते हुए पर्स उठाकर सीधे घर दौड़ना पड़ता है
माँ, मैं अब सच में जानती हूँ......
कि माँ होना इतना आसान नहीं होता।

कोरोना के संग मुश्किल होता जीना

श्री बिजेन्द्र कुमार बेरवाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

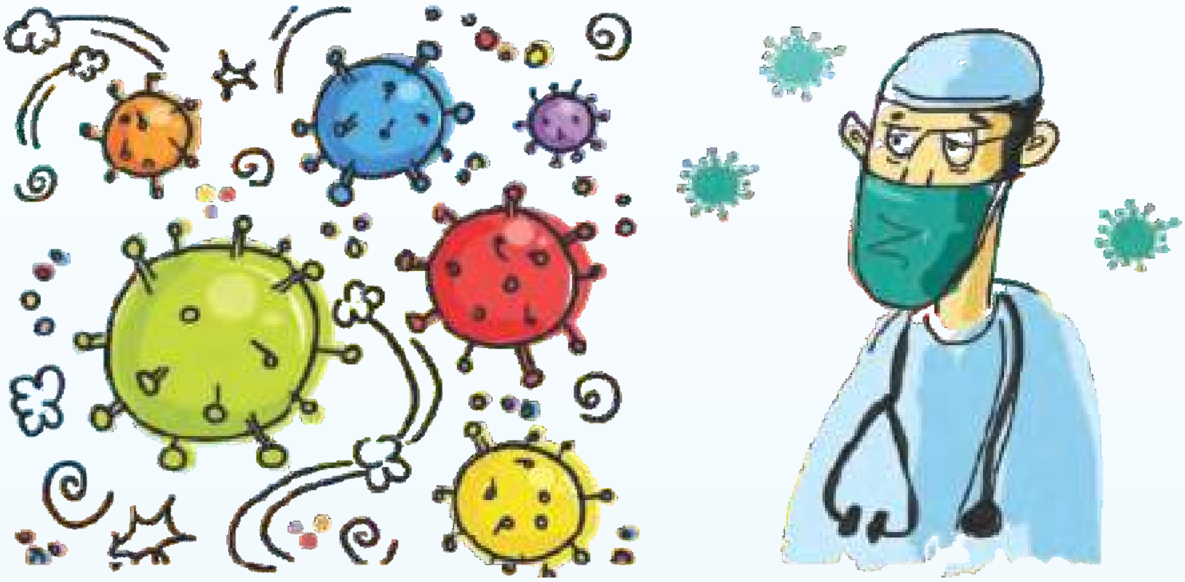

जैसा कि हम ये सब जानते हैं कि आज कल ज़िंदगी कोरोना के आने के बाद किन हालातों से गुजर रही है, जो ज़िंदगी पहले इतनी मुश्किल नहीं थी, या यूँ कहें कि इतनी ज्यादा कठिन नहीं होती थी अब वो ही ज़िंदगी बहुत मुश्किल हो चली है। हर कदम फूँक- फूँक कर रखना पड़ रहा है। हर समय ये ख्याल रखना पड़ता है कि कहीं हमसे कोई भूल तो नहीं हो गई है। ज़िंदगी कोरोना में इतनी उलझी हुई लगती है कि जब तक इस बीमारी का कोई पुख्ता इलाज नहीं आ जाता है तब तक इससे पार पाना मुश्किल लगने लगा है।

पहले तो ये लगता था कि कोई बीमारी आ भी जाए तो कोई बात नहीं, कितनी बड़ी-बड़ी दवाइयाँ हैं, अगर हमारे पास नहीं है तो कोई बात नहीं विदेश में तो मिल ही जायेंगी और उसका इलाज हमें उस बीमारी से बचा ही लेगा, लेकिन ये भ्रम भी टूट गया है। इस बीमारी के बारे में ऐसा नहीं है क्योंकि इस बीमारी के आगे सभी हॉस्पिटल, डॉक्टर, और बड़े-बड़े वैज्ञानिक और सभी दवाइयाँ फेल हो गई हैं। किसी के पास इस बीमारी की कोई दवा दूर-दूर तक नहीं दिखती है। इस बीमारी के इलाज के लिए कभी कोई देश कुछ दावा करता है तो कभी कोई देश कुछ दावा करता है। लेकिन अभी पूरे विश्व में कोई भी देश ऐसा दावा नहीं कर पाया है कि दूसरे सभी देश उसके दावे से सहमत हों और एक मत के रूप में इस बीमारी का इलाज निकल आए और सभी उसे अपना लें। अब तो दिन-रात विश्व के सभी देशों के वैज्ञानिकों, डॉक्टरों और अनुसंधान कर्त्ताओं के सामने ये बीमारी और इस बीमारी का इलाज मिलना एक चुनौती बना हुआ है।

डर तो देखो इस बीमारी का बाजार से कुछ भी सामान लाओ या खुद बाजार से आओ तो सबसे पहले कपड़े धोना, नहाना और अगर सामान लाए हैं, तो उसको पानी से अच्छी तरह से धोना और अगर मन में शक रह जाए कि सामान अच्छी तरह से धुला है कि नहीं तो सामान को

फिर से पानी या किसी और रसायनिक तरल पदार्थ जैसे कि कास्टिक सोडा से धोना या सैनिटाइज़ करना पड़ता है। मन में इतना वहम हो जाता है कि बार-बार ख्याल आता है कि इतना करने पर भी कहीं ये वायरस सामान पर छूट तो नहीं गया? देखो यह हमारे मन के वहम में कहाँ-कहाँ नजर नहीं आता है? क्या है जो बचा हुआ दिखता है? चाहे घर हो या बाहर, जैसे घर के सामान में टीवी का रिमोट, बर्तन, गैस, कमरे के दरवाजे पर लगी कुंडी, घर में पहनने वाली चप्पल, कपड़े अन्य सामान आदि। इसी तरह से बाहर कहीं भी कुछ भी कोई सामान जो दूसरे लोगो के संपर्क में आता है और बिना सफाई के रह जाता हो। इसी तरह दफ्तर में कंप्यूटर, माउस, मॉनिटर, कुर्सी, टेबल, फाइलें इत्यादि। यह वायरस हमें हर जगह दिखता तो नहीं है लेकिन महसूस जरूर होता रहता है। क्योंकि इसकी प्रकृति ही कुछ ऐसी बन गई है कि दिखता तो नहीं है लेकिन हमें महसूस हर जगह होता है। हमें इसे ऐसे ही समझ कर जीना होगा जब तक इसका कोई इलाज नहीं आ जाता है।

दिनों दिन इसके बढ़ते प्रभाव से बच्चों का घरों से बाहर जाकर खेलना बंद हो गया है, स्कूल बंद हो गए हैं। सारी पढ़ाई लिखाई ठप्प सी हो गई है, ऑनलाइन पढ़ाई होने लगी है जिससे शिक्षा का वो रूप नहीं रहा जब बच्चा कक्षा में बैठकर सबके साथ पढ़ता था और कुछ अच्छी बातें सीखता था, टीचर की निगरानी में रहता था। वहीं बच्चे अब बिल्कुल फ्री से हो गए हैं। अब केवल उनके हाथ में मोबाइल और टी.वी. का रिमोट ही अधिक दिखता है, बच्चे भी पढ़ाई से ज्यादा मोबाइल चलाने और टी.वी. देखने में अधिक रुचि रखने लगे हैं, पढ़ाई से जी चुराने लगे हैं। करें भी तो अब क्या करें? अब हवा जो बदल गई है और पूरी दुनिया ही कठिन दौर से गुजर रही है। सभी स्कूल और शैक्षिक संस्थान मजबूर हैं और चाहते हैं कि ये सब जल्दी से जल्दी ठीक हो और बच्चों का स्कूलों और कॉलेजों में आना-जाना शुरू हो। सब कुछ पहले जैसा सामान्य हो जाए और पढ़ाई-लिखाई और सामान्य ज़िन्दगी पटरी पर लौट आए।

आप और हम सबने देखा है कि किस तरह इस बीमारी ने लाखों लोगों के रोजगार छीन लिए हैं। कितने लोगों को इसने बेरोजगार कर दिया। इसी रोजी-रोटी के चक्कर में लाखों लोग अपने काम धंधे छोड़कर अपने घर की ओर पलायन कर गए, भले ही इसके लिए उनको हजारों किलोमीटर पैदल ही क्यों न चलना पड़ा हो और वो भी उस भरी दोपहरी में जब कोई भी घर से निकलने की भी नहीं सोचता है। लेकिन इसका डर कहें या असर इसने लोगों को अपना काम छोड़कर अपने घर जाने के लिए मजबूर कर दिया। उनका यह भी कहना था कि अब हमारे पास कुछ काम धंधा तो रहा नहीं, जितने पैसे थे वो भी अब खत्म हो गए हैं और मकान मालिक भी किराया मांगता है। उनका कहना था कि साहब जब हमारे पास खाने को पैसे नहीं हैं तो हम किराया कहाँ से देंगे? अब यहाँ रहकर क्या करेंगे? इसलिए हम अब अपने घर जा रहे हैं जो कुछ होना होगा वहीं हो जाएगा। भूखे पेट मरना यहाँ भी है और वहाँ भी, और अगर मरना ही है तो

क्यों न अपने घर वालों के पास ही मरें। इसलिए लाखों लोगों ने न चाहते हुए भी अपना काम धंधा छोड़कर अपने घर जाने में ही अपनी भलाई समझी और न चाहते हुए भी इस दौरान सड़क किनारे टैंट लगाकर रहने, सड़क पर सोने और सड़क किनारे भूखे पेट ही समय बिताने जैसी बहुत-सी तकलीफ़ें सहीं और ये तकलीफें केवल बड़ों ने ही नहीं सहीं इन बड़ों के साथ बच्चे भी शामिल थे जिन्हें कुछ पता ही नहीं था कि ये सब क्या हो रहा है? कुछ लोग तो घर पहुँच भी नहीं पाए और रास्ते में ही दम तोड़ दिया। लेकिन फिर भी नहीं रुके और पलायन जारी रहा जिसके लिए उन्होंने कानून, नियमों और लॉकडाउन की भी परवाह नहीं की और बस अपने घर की ओर चलते रहे।

ऐसे में यहाँ उन लोगों का जिक्र करना अत्यंत आवश्यक है जिन्होंने ऐसे लोगों की जितनी मदद हो सकती थी, वह की। चाहे उन्हें रास्ते में खाना खिलाकर मदद की हो, चाहे उन्हें उनके घर तक पहुंचाने में कोई साधन उपलब्ध कराकर मदद की हो या किसी और तरीके से। ऐसे लोगों में फिल्म सितारों के साथ-साथ हर वो व्यक्ति शामिल है जिसने किसी भी प्रकार से इनकी मदद की हो, अब चाहे वो छोटा हो या कोई बड़ी हस्ती हो।

समय-समय की बात है कि एक समय था जब लोग स्वछंद होकर घूमते थे और अब देखो वो ही स्वछंद व्यक्ति घर में कैद हो कर रह गया है, स्वतंत्र होकर भी अपने आपको घर में कैद महसूस करता है। न चाहते हुए भी मुँह पर बाहर निकलते ही मास्क लगा कर रखना ही पड़ता है और जब तक घर वापिस नहीं पहुँच जाते तब तक मास्क को उतारना भी नहीं होता, सिर्फ घर जाकर ही 20 सेकंड तक साबुन से अच्छी तरह हाथ धोने या नहाने पर ही कोरोना और मास्क से मुक्त हो पाता है।

कोविड-19 जो इस बीमारी का नाम है, इसका करिश्मा तो देखो कि ये किसी को प्रत्यक्ष आँखों से नहीं दिखता है, लेकिन ये अपना काम बराबर चालू रखता है। लोगों को अपना शिकार बनाना लगातार जारी रहता है। ये वायरस कुछ नहीं देखता न कोई गरीब, न अमीर, न छोटा और न कोई बड़ा, न कोई बच्चा, या न कोई बूढ़ा, इसके लिए सब बराबर हैं, अच्छे से अच्छे और बड़े से बड़े पहलवान तक तो इसने अपनी चपेट में ले लिया हैं। टी.वी. पर इसके ऐसे शिकार लोगों की फोटो दिखाते है कि दिल ही सहम जाता है और यूं लगता है कि जब ऐसे स्वस्थ और हट्टे-कट्टे लोगों को इसने नहीं छोड़ा तो हम किस खेत की मूली है? न जाने हम भी कब इसकी चपेट में आ जायें। बस जो दिन ठीक से गुजर जाता है तो शुक्र मनाते हैं कि चलो आज का दिन तो ठीक निकल गया, अभी तक बचे ही हुए हैं। आगे भी हम सब इससे बचे रहें यही हमारी ऊपर वाले से कामना है। टी.वी. पर आने वाली खबरें कई बार तो और भी डरा देती हैं कि जब खबर आती है कि आज दस हजार लोग इससे प्रभावित हो गए। आज 50 हजार लोग इससे प्रभावित हो गए और ये आँकडा अभी बढ़ता ही नजर आ रहा है और अभी हमें इसके साथ ही जीना सीखना होगा, क्योंकि अभी आने वाले एक दो सालों में इसका कोई इलाज आता नहीं दिख रहा है। वाकई ऐसी खबरों से और भी मन डरने लगता है, पर क्या करें, जो सच है, वो तो है ही, उसे कोई झुठला नहीं सकता। लेकिन प्रभु से मेरी ये प्रार्थना है कि हमें जल्द ही इस परेशानी से निजात मिले इसको आगे आने वाले सालों में जगह न मिले बल्कि जल्द ही इसका इलाज हमारे लिए उपलब्ध हो जाए।

जब कोरोना से होने वाली घटनाओं के बारे में कही बात चलती है तो मैंने तो लोगों को ये भी कहते सुना है कि भाई इससे डरने की बात नहीं है जिसका नंबर आ रखा है वो जाएगा और जिसे भगवान को बचाना है, उसे भगवान बचा लेंगे। लोगों की ऐसी बात सुनकर बड़ा ही अजीब-सा लगता है कि भाई चाहे कोई कितना भी दुखी क्यों न हो फिर भी मरना तो कोई नहीं चाहता है और ऐसे हालातों में तो बिल्कुल नहीं। सभी जीना चाहते हैं, लेकिन सोचते कहाँ हैं जो मुँह में आया बोल देते हैं, वो ये नहीं सोचते हैं कि ऐसा बोलने से किसी को बुरा भी लग सकता है। इस पर हम कुछ नहीं कह सकते, ये उनकी अपनी समझ है।

ये अगर किसी को हो जाए और वो फिर भी बच जाता है, तो वो बहुत ही किस्मत वाला है जो इस बीमारी को हराकर ठीक-ठाक अपने घर वापिस आ गया। आपने तो टी.वी. पर देखा ही होगा कि किस तरह ऐसे व्यक्ति का स्वागत घर वाले और कॉलोनी वाले करते हैं और सभी बहुत ही राहत की सांस लेते हैं कि चलो व्यक्ति ठीक होकर अपने घर आ गया है। ऐसे में उसे किस्मत वाला ही कहा जाएगा। यहाँ एक बात और बताता हूँ कि ऐसा भी देखने में आया है कि व्यक्ति ठीक होने के बाद भी इसका पुनः शिकार हो जाते हैं और कई बार तो जान से भी हाथ धो बैठते हैं, क्योंकि ये वायरस फिर से शरीर में अपना प्रभाव दिखाने लगता है जिसकी वजह से फिर शरीर में कोई समस्या खड़ी हो जाती है और फिर कोई नई बात सामने आती है जिसके वजह से फिर इस वायरस के बारे में धारणा बदल जाती है।

शुरुआती दौर में तो इस वायरस को समझना ही मुश्किल था और अब भी कोई इसका एक रूप सामने नहीं आया है। इसके बारे में दुनिया में अलग-अलग धारणायें विद्यमान हैं जैसे कि कोई कहता है कि छूने से फैलता है, कोई कहता है कि संपर्क में आने से, कोई कहता है कि छींकने से और न जाने कौन-कौन से दूसरे तरीकों से। कुल मिलाकर एक बात तो सभी कहते हैं कि जब तक इस बीमारी का कोई पुख्ता इलाज नहीं आ जाता तब तक केवल सोशल डिस्टेन्सिंग और साबुन से 20 सेकंड तक अच्छी तरह हाथ धोना और मुँह पर मास्क लगाए रखना ही इससे बचने का एकमात्र उपाय है। जब तक इलाज नहीं आ जाता तब तक इन उपायों के सहारे हम बच सकते हैं या बचने का प्रयास तो कर ही सकते हैं।

इस बीमारी से हमारा बचाव करने के लिए हमारी केंद्र सरकार, सभी राज्यों की सरकारें, डॉक्टर्स, मेडिकल स्टाफ, पुलिस, सोशल कर्मी सभी लोग तो हमारी जान बचाने में लगे हुए हैं। हमें उनका शुक्रिया अदा करने के साथ-साथ सम्मान भी करना चाहिए जो अपनी जान की परवाह किए बिना हमारे लिए दिन-रात काम कर रहे हैं। बस अब तो ईश्वर, भगवान या अल्लाह या जीसस या गुरूनानक कोई भी हो हम अपने भगवान को चाहे किसी भी नाम से पुकारते हों, उनसे यही प्रार्थना है कि जल्द से जल्द इसका पुख्ता इलाज आ जाए ताकि सब लोगों की जान बच जाए और हालात पहले से सामान्य हो जाएं और हम सबका भविष्य सुरक्षित हो जाए और फिर से एक बार हम खुल कर सही मायनों में जीने लगे।

दो ऐनक

श्री राजकुमार साहिल
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

आने को तो आ रहा
ज़िन्दगी का सुरूर जी
बढ़ती उमर के असर
मगर होते हैं ज़रूर जी।

दो ऐनक बनवाने को
होते हैं हम मजबूर जी
एक ऐनक पास की तो
दूसरी ऐनक दूर की

कई मौके फिसल गए
फिसल गए अनजाने में
ज़रा-सी देर लगी मुझे
सही ऐनक लगाने में

सलीमा, वलीमा, शमीमा
फिर वो कौन थी ?
कई दिन लग गए
दिल को मनाने में।

दिन अपना अच्छा निकले
निकले अच्छे मूड से
बीवी और टीवी देखिए
बस हमेशा दूर से।

गुस्सा आए तो कभी
जा बैठिए दूर पे
ऐनक पहनिए फिर
बीवी को देखिए घूर के।

ऐसा नहीं कि हर समय
हो फायदा ही फायदा
अलर्ट रहना जीवन में
ज़रूरी है बाकायदा।

वरना हो जाए हादसा
इरादा बे इरादा
बिगड़ जाए माहौल फिर
वरना ज़्यादा और ज़्यादा।

शॉपिंग में मग्न थे
मग्न थे अपनी बात में
अनजाने में ले लिया मैंने
किसी और का हाथ, हाथ में।

गनीमत यह थी कि
बीवी थी मेरे साथ में
वरना सोचिए मामला
क्या बनता मेरे साथ में

जगजाहिर हो गई जब
सारी की सारी बातें
माहिर सलाहकार आकर
अक्सर मुझे बता जाते।

दो ऐनकों का झंझट
क्यों नहीं मिटाते
दुकान पर जाकर तुम मियां
बाइफोकल ऐनक क्यों नही बनवाते।

बाइफोकल ऐनक जब से
मैंने आँखों पर चढ़ा ली
छोटी मुश्किल जो भी
बड़ी मुसीबत बना ली।

ऑफिस का काम तो मैं
चला लेता हूँ ऐसे-वैसे
घर में ऐनक पहनू तो
घर लगे भूल भुलैया जैसे।

सीढ़ियाँ चढ़ लेता हूँ
करके यत्न जैसे-तैसे
सीढ़ियाँ उतरना बड़ा मुश्किल
उतरूं तो उतरूं कैसे?

मेरे पाँव से एक दिन
सीढियाँ ही फिसल गई
मेरे शरीर की सारी की सारी
हड्डियाँ ही हिल गईं।

मेडिकल ग्राउंड पर
छुट्टियाँ तो मिल गईं
बिस्तर पर लेटे-लेटे मगर
लागे सदियाँ निकल गयीं

बाइफोकल ऐनक ने तो
याद करवा दी है नानी
बाइफोकल ऐनक बनवाना ही
मेरी हरकत थी बचकानी।

अब तो यारों आपको भी
एक बात है बतानी
ठीक हूँगा तो फिर से मैंने
दो ऐनक अलग-अलग हैं बनवानी।

बचपन

श्री संजय कुमार
आँकडा प्रविष्टि प्रचालक

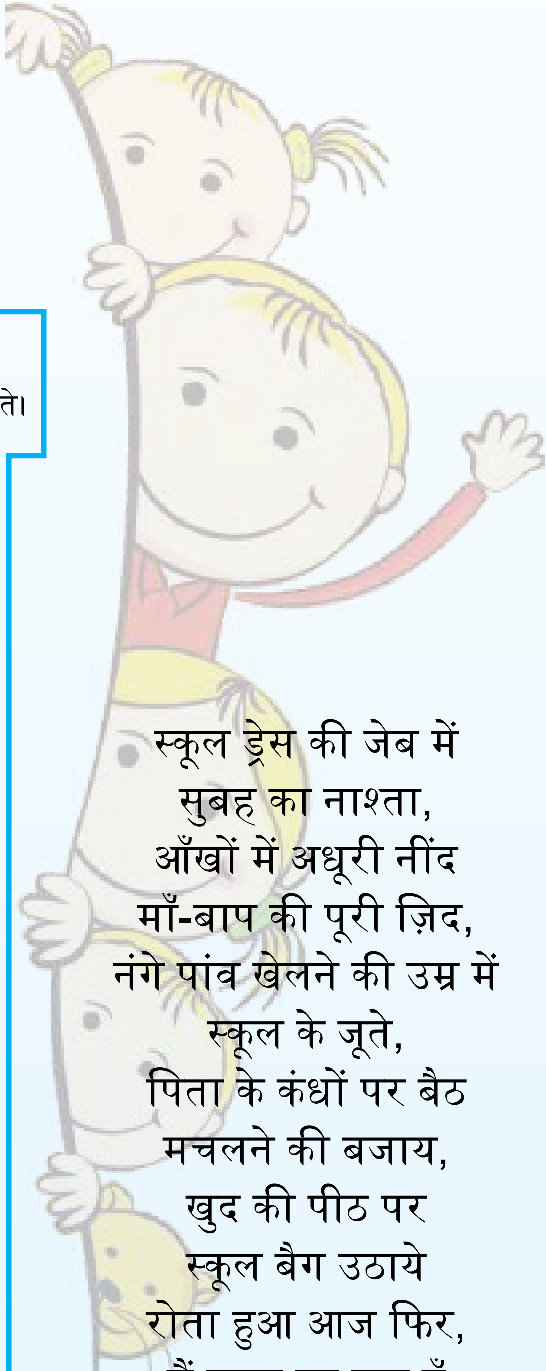

स्कूल ड्रेस की जेब में
सुबह का नाश्ता,
आँखों में अधूरी नींद
माँ-बाप की पूरी ज़िद,
नंगे पांव खेलने की उम्र में
स्कूल के जूते,
पिता के कंधों पर बैठ
मचलने की बजाय,
खुद की पीठ पर
स्कूल बैग उठाये
रोता हुआ आज फिर,
मैं स्कूल जा रहा हूँ
बदलते वक्त की खातिर
अपना बचपन गंवा रहा हूँ,
रोता हुआ आज फिर
मैं स्कूल जा रहा हूँ।

स्कूली जिंदगी में रिजेक्शन, असल जिंदगी से सिलेक्शन

श्री शंशांक कुमार चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ये किस्सा जो मैं आप सबको बताने जा रहा हूँ वो सातवीं कक्षा से लेकर 12वीं कक्षा तक मेरे एक मित्र के साथ चला। इस मित्र की कहानी ने मुझे इतना परिपक्व बना दिया। किस्सा कुछ यूं है कि मैं एक अंग्रेजी माध्यम स्कूल में पढ़ा हूँ और मेरा यह मित्र ने 7वीं में हमारे स्कूल में दाखिला लिया। अमित सांवला था, दुबला-पतला था, गांव के हिंदी माध्यम स्कूल से उसने प्रारंभिक शिक्षा ली थी। हीन भावना से ग्रस्त था, उसके माँ, बाबू जी गांव में ही रहते थे और वो शहर में किसी रिश्तेदार के यहाँ रहकर पढ़ाई कर रहा था। वह गरीब था। परंतु गरीब क्या होता है? किसे कहते है? ये मुझे नहीं पता था, क्योंकि मेरे स्कूल में सब संभ्रांत परिवारों के ही बच्चे आते थे।

सातवीं के बच्चे तो फिर बच्चे ठहरे, कितने परिपक्व होते हैं, अमित के दाखिला लेते ही पूरी कक्षा में उसे मजाक का पात्र बना दिया गया, मसलन उसका नामकरण कर दिया गया, 'कल्लू', 'काला जाम', 'कल्ले खान', 'काली हड्डी' इत्यादि। अब इन बच्चों के माँ-बाप कुछ बड़े ओहदों पर थे जैसे कि आईएएस, बडी कंपनी के इंजीनियर (पीएसयू) तो घमंड तो उन बच्चों में कूट–कूट कर भरा था। सातवीं की लड़कियों ने तो उसका सामाजिक बहिष्कार तक कर दिया था, क्योंकि वह उन बच्चों के हिसाब से नहीं दिखता था जैसा कि उस कक्षा के बच्चे चाह रहे थे कि वह भी उन जैसा ही दिखे, बल्कि इसके विपरीत वह उन बच्चों को पूरा गंवार नज़र आता था।

बच्चे तो छोड़ो, इस रेस में अध्यापक भी पीछे नहीं रहे, अमित पर थोड़ा ध्यान देने की बजाय उससे मुँह चुराते थे और उसके साथ बिल्कुल अच्छा बर्ताव नहीं करते थे। स्कूल में अध्यापक भी तकरीबन संभ्रांत परिवारों से ही थे तो उन्हें भी अमित जैसे बच्चे से कोई लगाव नहीं था। वह भी अधिकतर उन्हीं बच्चों पर ध्यान देते थे, जिन्हें वो पसंद करते थे। ऐसे में अमित का सांवला रंग, उसका मोडर्न न दिखना एक अभिशाप जैसा बन गया था।

एक बार तो स्कूल की एक अध्यापिका मिस नुपूर ने पेरेन्ट्स मीटिंग में रोहन के पापा से शिकायत भरे लहज़े में कहा कि (आप अपने लड़के को उस काले लड़के से दूर रखिए वरना आपका लड़का उसके साथ रहा तो वह भी बिगड जाएगा)। Please keep Rohan off that dark swarthy guy otherwise Rohan may go in for a toss) कक्षा में कोई और भी शैतानी करता तो सभी का यही मानना रहता कि किसी ने शैतानी की है तो पक्का उस काले लड़के ने ही की होगी क्योंकि मैडम का भी यह मानना था कि गोरे लड़के कहां शैतानी करते हैं, ये सब बदमाशियां तो अमित जैसे काले लड़कों की ही रहती हैं।

जरा सोच के देखिए कि 12 साल का भोला-सा लड़का जिसके पिताजी खेती करके अपने लाल को अंग्रेज़ी के एक टॉप स्कूल में पढ़ा रहे हों और ये उम्मीद कर रहे हों कि वहाँ के माहौल में लड़का कहीं पिछड़ ना जाए और फर्राटेदार अंग्रेज़ी बोलेगा और इस तरह अमित के पिता ने अमित

से बहुत उम्मीदें भी लगा ली थीं, लेकिन ये क्या इन सबके विपरीत स्कूल में तो उल्टा उनके बच्चे के साथ तो कुछ अलग ही हो रहा था। अमित को तो सांवले रंग, दुबले शरीर और अंग्रेजी न बोलने के लिए प्रताड़ित किया जा रहा था, उसे सम्मान की जगह अपमान का सामना करना पड़ रहा था। कक्षा के जो बच्चे उसके दोस्त होने चाहिए थे वो उसके दोस्त न बनकर उसके विरोधी हो गए थे, कोई मौका नहीं जाने देते थे उसे नीचा दिखाने का। जरा सोचिए तो उस 12 साल के बच्चे पर और उसके माँ-बाप पर क्या बीतती होगी? ऐसे में उसकी क्या मनोस्थिति रहती होगी ? इस बात को आप और हम अच्छी तरह समझ सकते हैं।

स्कूल में हमें भारत का इतिहास पढ़ाया जाता है कि कैसे अंग्रेजों को अपने गोरे रंग का घमंड था और वो हम काले भारतीय लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते थे, बस यहाँ उल्टा हो रहा था। मेरे स्कूल में भारतीय ही रंग के मामले में अपने से अलग दिखने वाले एक सामान्य लड़के के साथ वैसा ही व्यवहार कर रहे थे, जैसा अंग्रेज़ उन दिनों भारतवासियों के साथ किया करते थे।

अमित का आत्मविश्वास पूरी तरह डगमगा गया था, वो ज़रा भी पढाई में ध्यान नहीं लगा पाता था, रोता था, कुढ़ता था और कहीं भी अपने दिल की बात नहीं कह पाता था। वो करता भी तो क्या ज़िंदगी की सच्चाई से उसका बहुत जल्दी वास्ता जो हो गया था। उसे ठोकर लगी थी, स्कूली ज़िंदगी में उसे कदम-कदम पर अपमान सहना पड़ा, जिससे मन पर चोट बहुत गहरी हो चली थी और ये सब सोचते-सोचते अमित के आंसू बहने लगे।

यह सिलसिला पूरे पाँच साल चला और किसी तरह अमित 10वीं और 12वीं में औसत नंबर लेकर पास हो गया और फिर शहर छोड़कर कहीं चला गया। 12वीं तक अंग्रेज़ी बिल्कुल नहीं बोल पाता था जबकि वह 12वीं तक अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूल से ही पढ़ा था। 12वीं में दूसरे बच्चों के मुकाबले उसके अंग्रेज़ी में केवल 57 अंक ही आए जो काफी कम थे।

अभी दो साल पहले अमित मुझे फेसबुक पर मिला, फिर हमने मिलने का प्लान बनाया और जब हम मिले तो मैंने देखा कि उसने अपने आप को पूरी तरह से बदल लिया था। वह सिक्स पैक के साथ बलिष्ठ शरीर और चेहरे पर तेज के साथ पूरा किसी फिल्म के हीरो की तरह लग रहा था। फिर हमारी बातों का सिलसिला शुरु हुआ, जिसमें हमने शुरूआत मिस नुपूर मैडम और उनकी बातों से की। बाद में उन लड़कियों के बारे में भी बातें की जो अमित को अपने से दूर रहने का अहसास कराती रहती थीं और उससे बात करना भी पसंद नहीं करती थीं। हमने उन लड़कों के बारे में बातें की जो अमित के साथ शरारत किया करते थे और जो उसको देख कक्षा में अपनी जगह बदल लिया करते थे।

हमारी बातों में हर वो बात शामिल हुई जो हमारे दिमाग में पिछले कई सालों से दबी हुई थी। उस दिन हमने खुल कर अपने-अपने दिल की बातें की और यह होना लाज़मी भी था क्योंकि उस दिन हम दोनों और खासकर अमित अपने को पूरी तरह स्वतंत्र महसूस कर रहा था, जो मुझे उसकी बातों में साफ झलक रहा था। मैंने हिम्मत करते हुए उससे पूछा कि यह सब बदलाव कैसे

हुआ तो उसने कहा कि वो ज्ञान मुझे किसी बड़े ऋषि मुनि से नहीं मिला, बल्कि समय के साथ-साथ सब बदलाव होते चले गए और मैं आज आपके सामने जिस अवस्था में हूँ वो सब उन्हीं बदलावों का परिणाम है। उसने वो सब बताते हुए मुझे कहा कि मुझमें आत्मविश्वास की बहुत कमी थी, वो इसलिए नहीं कि मैं सांवले रंग का था, दुबला-पतला था, बल्कि इसलिए कि मैं अपना आत्मविश्वास दूसरों में ढूंढता था। उसका कहना था कि वो कितनी भी मेहनत क्यों न कर ले, लेकिन जब तक सामने वाला उसकी तारीफ नहीं करेगा तब तक मुझे मेरी मेहनत सफल प्रतीत नहीं होती थी। पर अब मुझे लगता है कि मेरी खुद के प्रति वो सोच ही गलत थी, जो मैं दूसरों में ढूंढता था। मेरी ज़िंदगी में इन सब बातों का होना भी महज एक इत्तेफाक ही रहा कि जल्द ही मुझे जिंदगी के खट्टे-मीठे अनुभव हो गए और उसने अपनी बात खत्म करते हुए कहा कि जो परिपक्वता उसमें इस उम्र में आ गई है वो कई लोगों में रिटायरमेंट तक भी नहीं आ पाती।

आगे उसने फिर कहा कि स्कूल छोड़ने के बाद यह मेरा दूसरा जन्म था, इसके लिए मैं स्कूल की हमारी मैडम मिस नुपूर और उन सभी लड़के-लड़कियों का धन्यवाद करना चाहूँगा जिन्होंने मुझे उस समय बेइज्जत करने का कोई भी मौका नहीं छोड़ा जो उनको उस समय करने में मजा आता था। मजे की बात तो देखो कि उन्होंने मुझे कुछ सिखाने की बजाय हर समय मेरा मज़ाक ही उडाया, मेरा अपमान ही किया। हाँ, उन्होंने मुझे एक बात ज़रूर सिखाई और वो थी रिजेक्शन और सिर्फ रिजेक्शन। जिसने मुझे इस रिजेक्शन से लड़ने के लिए तैयार कर दिया और स्कूली ज़िंदगी के उसी रिजेक्शन ने मुझे असल ज़िंदगी में सिलेक्शन का पाठ पढ़ाया और उसी पाठ ने मुझे जीवन में केवल जीत और सिर्फ जीत हासिल करने के लिए प्रेरित किया और उसी जीत ने आज तुम्हारे सामने उसी कमजोर अमित को आत्मविश्वास से भरपूर और जीवन के प्रति ऊर्जावान युवक के रुप में लाकर खड़ा कर दिया है, जो कभी कमजोर हुआ करता था।

उसकी बातें मेरे दिल को छू गईं और देखिए आज अमित मेरा रोल मॉडल है। उसकी बातों ने मुझे अंदर तक प्रभावित किया। मैंने उसे उसकी बातों में जमीन से उठते हुए देखा है। जो लड़कियां अमित के बगल में बैठने से कतराती थी या उससे बात करना भी पसंद नहीं करती थी, उन लड़कियों के हसबैंड अमित के सामने फीके पड़ते हैं। जो लड़के उसे कल्लू, गंवार और न जाने क्या-क्या कहते थे वो भी आज उसके सामने कहीं नहीं टिकते थे।

अमित ने स्कूल छोड़ने के बाद बीसीए किया और उसमें वो गोल्ड मेड्लिस्ट रहा। फिर सिंबायोसिस से एमबीए (अच्छे जीपीए के साथ) और बाद में एमबीए के दौरान उसे अपनी ही एक सहपाठी से प्यार हो गया और अब दोनों जल्द ही शादी करने वाले हैं, दोनों को इंतजार है तो बस, कोरोना के खत्म होने का.........

रण

श्री रमन कटारिया
सहायक लेखा अधिकारी

अपने रण में जूझ रहा
उत्तर शब्दों से पूछ रहा

ये मेरी कहानी कैसी है
मुझको ही अब न सूझ रहा

समय का काँटा चलता रहा
दीया लिए मैं फिरता रहा

न लहर मिली, न राह मिली
कैसा जीवन ये कूच रहा

सब पाकर भी खाली हाथ मेरे
मेरा मैं, मुझसे ही दूर रहा

मैं चलता रहूँ, बस चलता रहूँ
आशा खुदसे है इतनी-सी

मिट जाएगी ये आँधी भी
रहती है कितनी रात यहाँ

वो दिया जाए बुझ भी अगर
मैं रण में लड़ता रहता हूँ

ये लहू पसीना पानी है
पीड़ा से हर पल कहता हूँ

समय वही, ऊर्जा भी वही
ये काल कपाल बताता रहा

कितना भी जलाले सूर्य मुझे
फूँक मार इसे, मैं बुझाता रहा

प्रतिज्ञा है मिट जाऊं अगर
मैं फिर, लौट के आऊंगा

हाथों की लकीरों का है क्या?
रण शस्त्रों से इनको मिटाऊंगा
मैं फिर से लौट के आऊंगा।

गज़ल

श्री इश्तियाक
डाटा प्रोसेसर

न छेड़ा, न छेड़े थे, साज़ दिल के
न बचपन ही पाया न आई जवानी
लड़कपन की दहलीज पर हदिशों ने
जवानी की खुशियों की मिसदा सुनाया।

जवां जब हुए, शजरे ममनों
न कोई हमदम, न कोई शनासा
सपनों की लड़ियाँ पिरोई जो मैंने
झपकी जो आँखें तो सपना ही पाया

मजबूरियों ने ये गत है बनाई
मेरे साज टूटे मेरा नगमा रूठा
करें क्या बयाँ शोक, अपनी कम नसीबी
मुझे मेरी ही लोरियों ने रूलाया।

क्या वाकई इंकलाब कहीं खो गया है

श्री रुखसार अंजुम
आशुलिपिक

क्या था जो तुझमें कहीं खो गया है
ए नौजवान! वो इंकलाब क्या कहीं खो गया है।
कितनी माँओं ने अपने लाल कुर्बान किए जिस
सरज़मीं के लिए
कैसा ये हाल आज उसका हो गया है।

नज़र नहीं आता तुझे तानाशाही सियासत में
गरीबों का तड़पना
आज़ादी के नशे में क्या तू अपने ही मुल्क में
कहीं खो गया है।
या फ़िर से तेरे लिए सब आम हो गया है
इसी रहगुज़र में सुबहो-शाम हो गया है।

जल गई है आग, फ़िर से नफ़रतों की देश में
इंसान का वजूद मंदिर-मस्जिद के बीच कहीं
खो गया है।
क्या था जो तुझमें कहीं खो गया है
ए नौजवान! वो इंकलाब क्या कहीं खो गया है।

क्या था जो तुझमें कहीं खो गया है
ए नौजवान! वो इंकलाब क्या कहीं खो गया है।
जो आम नागरिक बड़ी मशक्कत के बाद जागा
था वो
फ़िर से सो गया है।

किसी को नज़र नहीं आती सच्चाई समाज की
गांधी का सपना आज फ़िर से धुंधला हो गया है।
कभी सजाया था नौजवानों ने, बूढ़ों ने, बच्चों ने,
और किसानों ने,
वो आज़ाद भारत का सपना फ़िर से धूमिल हो
गया है।

क्या था जो तुझमें कहीं खो गया है
ए नौजवान! वो इंकलाब क्या कहीं खो गया है।
मज़दूर बनाता है ऊँची-ऊँची इमारतें
क्या था जो तुझमें कहीं खो गया है
ए नौजवान! वो इंकलाब क्या कहीं खो गया है।
सरकारें सोती रहीं कोविड की चादर ओढ़कर
पैरों में छाले पड़ गए पैदल सफर तय कर-कर।

उसको फर्क नहीं पड़ता, वो कुछ नहीं कहता
कहते-कहते ही अपने में इंसान कहीं खो गया है।
क्या था जो तुझमें कहीं खो गया है
ए नौजवान! वो इंकलाब क्या कहीं खो गया है।

क्या था जो तुझमें कहीं खो गया है
ए नौजवान! वो इंकलाब क्या कहीं खो गया
है।
अब अहले वतन की फिक्र सताती नहीं तुझे
या तू फ़िर से गुमनाम हो गया है।

वो बूढ़ी आँखें राह देखती पथरा गईं
जिसका बेटा दंगों में कहीं खो गया है।
अंधेर नगरी अनबूझ राजा, टके सेर भाजी टके
सेर खाजा
का कहना आज सच हो गया है।
गरीब अपनी गरीबी में ही कहीं खो गया है
और अमीर, अमीर होने के गुरूर में ही गुम हो
गया है।
क्या था जो तुझमें कहीं खो गया है
ए नौजवान! वो इंकलाब क्या कहीं खो गया है।
क्या था जो तुझमें कहीं खो गया है
ए नौजवान! वो इंकलाब क्या कहीं खो गया है।
इंसानियत आज फ़िर से नेस्तोनाबूत हो गई
और हरित खेती आज फ़िर से बंजर हो गई।
इंसान का खून आज भगवा और हरा हो गया है
और ज़मीन का रंग आज खूनी लाल हो गया है।

और छत नहीं आज उसी के सिर पर।
जो दे रहा है अन्न दुनिया को
आखिर में वही भूखा सो गया है।

गरीब दर्द सह-सह के थक गया, बच्चा भूखा रो-रो
के सो गया
आख़िर में हाल फ़िर से वही सन् 1947 वाला हो
गया है।
क्या था जो तुझमें कहीं खो गया है
ए नौजवान! वो इंकलाब क्या कहीं खो गया है।

वसंत

श्री शफी मोहम्मद मीर
वरिष्ठ लेखाकार (सेवानिवृत्त)

फिर वसंत आया सखी री, फिर वसंत आया
सुप्त शांत मूर्च्छित कण-कण में, नव जीवन लाया सखी री...

छहरे मोहित उन्मद बादल
फहरायें भू हरितांचल
इत-उत फूटे प्रेम के निर्झर, मरू-तरू सरसाया सखी री...

अंकुरित मुकुलित डाली-डाली
पात-पात छाई हरियाली
छंद-छंद है रज से सुरमित
सुख उन्माद छाया सखी री...

खगकुल अलिकुल पिक सुर गुंजन
कोयल कुंजन उपवन-उपवन
मधुकर के भावुक चुंबन से कली को कुसुमाया सखी री...

हर्ष भरा मन आनन-आनन
इच्छायें करती उर मंथन
अंग-अंग में लहर लास्य की नव उत्कृष्ट छाया सखी री...

मधुर मिलन की पावन बेला
अनुरागी मन मीर अकेला
अब तो आजा, श्वास-श्वास में, आज मदन छाया सखी री...

क्यों

श्री विक्रम बादल
आँकड़ा प्रविष्टि प्रचालक

क्यूँ रोके हो शब्द, अब भी गले से नीचे ही
क्यूँ लिखे नहीं, अभी तक हक़ कागजों पर
क्यूँ डरे छिपे हो अब भी दीवारों-बस्तियों के पीछे
क्यों नहीं लड़ें तलवारें अस्थियों की तेरे
कहाँ तक दर्द–ए–गरीबी सोचते रहोगे
दुनिया यहीं है, यहीं है उनकी दुनियादारी
कहाँ तक उनकी कोरी बातों को पूजते रहोगे
क्यूँ रोके हो ... क्यूँ डरे छुपे हो...
नहीं है हमदर्द वो तेरे ये उनका व्यापार है
कहाँ तक उनके सजदे में वक्त–दर-झुकते रहोगे
क्यूँ है नहीं अपने पे तुझे आज भी ऐतबार
क्यूँ सहमे सिमटे किनारे सड़क पे दौड़ते रहोगे
क्यूँ नहीं पूजते उन्हें जिसने सिखाई आज़ादी
कहाँ तक सर झुकाए उनसे मांगते रहोगे
क्यूँ लिखे नहीं .... क्यूँ नहीं लड़े..............
क्यूँ बनके लोगों को अपने नीतियों की बात करते हैं
कहाँ की ये नीति और धर्म तुम्हें आबाद करते हैं
कहाँ हैं रक्त में सने कफ़न कहाँ लाशें पड़ी हैं।
कहाँ है ये मज़हब, कहाँ साँसे बिछी
पड़ा है देह धरती पर, रूह आसमानों में
लिखी है लेखनी, सारी लिखाई कागजों की है।
कहाँ तक रब........... कहाँ तक उनकी डोरी............

मैं कहाँ हूँ

श्री रमन कटारिया
सहायक लेखा अधिकारी

बिन मांझी सपने दिल में सजाए
लहरों की उम्मीद की गठरी, सर पर उठाए

रुतबा पैसा शान-ए-शौकत सब मिला
न जाने किस रास्ते पर चल पड़ा हूँ

मंज़िलों की आस में दिए जलाये चल पड़ा था
न जाने किस राह पर
हाथ खाली देख सोचता हूँ, मैं जहाँ था

मैं अब, मैं नहीं हूँ, मैं कहाँ हूँ

दिशाओं के बुलावे जो सुन लिए थे
मंज़िलों के दिए आँखों में जलाए

खोजता हूँ किनारों पर सोते हुए धुँधले
कदमों के निशानों को,
मैं कहाँ हूँ, मैं जहाँ था, मैं नहीं हूँ

मैं वहीं हूँ या नहीं हूँ
बड़ी दूर छोड़ आया खुद को ही पीछे
कहीं दूर जाने,

आज भी शायद वहीं हूँ, हाँ मैं वहीं हूँ।

औसत बंदा

श्री विशाल कांवत
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं एक औसत वर्गीय बन्दा हूँ साहब
अंग्रेज़ी में जिन्हें 'एवरेज' कहते हैं
खेल में, पढ़ाई में, कला में, सौन्दर्य में
देह में, दिमाग में, यहां तक
कविता लेखन में भी
जो कि मेरा कौशल विषय रहा है|

मुझे नहीं मालूम मुझ जैसे 'एवरेज'
बंदों की इस दुनिया में कितनी तादाद है
जो अपने औसतन दर्जे को
निपुणता की ओर ले जाने के लिए
भरपूर कोशिश में जुटे हैं।

हमारे नाम कभी इतिहास के पन्नों पर नहीं उभरे
और ना ही कोई कौशल उदाहरण बने...
हां, 'क्रांतिवीर' फिल्म में 'पाटेकर' साहब के
डायलॉग में ज़रूर सटीक बैठते हैं-
'क्यों जिये मालूम नहीं, क्यों मरे मालूम नहीं'

मगर सच कहूं तो मैं संतुष्ट हूँ साहब
मुझे इस औसतन दर्जे से कोई
ग्लानि नहीं होती..
जिस प्रकार प्रकृति का नियम है
धरा का संतुलन बनाये रखना, ठीक वैसे ही
संतुलन की कामना करते हैं
हम जैसे एवरेज लोग।

हम ना ज्यादा अच्छे होते हैं ना ज्यादा बुरे
ना बहुत सही ना बहुत गलत
ना अधिक कोमल ना अधिक कठोर

अधिकतम से ऊपर कुछ नहीं होता
न्यूनतम से नीचे कुछ नहीं होता
तो हम ही हैं घटाव और जुड़ाव की असली कुंजी
प्रयासों की मात्रा के हिसाब से
घटती बढ़ती रहती है हमारी संख्या।

शायद इसीलिए गणितज्ञ हमें अधिकतम
और न्यूनतम का 'मीन' पुकारते हैं..
और आप जैसे लोग, औसत या एवरेज।

गृहिणीः एकमात्र औहदा या इससे कहीं ज्यादा

सुश्री स्वाति मलिक
लेखापरीक्षक

एक गृहिणी यानि घर का कामकाज संभालने वाली महिला का 15 साल का सफर तय करने के पश्चात एक रोज़ मैंने यही सोचा की इन 15 सालो में मैंने सिर्फ घर के ही काम किए या कुछ इससे भी ज्यादा? वैसे इस ख्याल की उपज मेरा दिमाग नहीं बल्कि घर के अन्य सदस्यों की सोच थी जिन्होंने मुझे इस सफर में बहुत बार एहसास कराया कि मैं सिर्फ घर के साधारण कामकाज ही तो संभालती हूँ और करती ही क्या हूँ?

बहुत सोचने पर मन ने सिर्फ यही जवाब दिया कि यदि मैंने सुबह सबसे पहले उठकर खाना न बनाया होता तो पति कैसे समय पर ऑफिस जा पाते? यदि मैंने स्कूल बस आने से पहले बच्चों को तैयार ना किया होता तो बच्चे खुद को कैसे समय पर स्कूल में पाते? क्या होता उन बूढ़े माँ-बाप का जिनको समय पर दवा या चाय ना मिली होती? क्या सूरत होती उस घर की जिसको मैंने प्यार से सजा के साफ सुथरा ना रखा होता। इसी बीच मुझे एहसास हुआ की इन सब काम-काजों के बीच मैं कहाँ हूँ? क्या मैंने खुद को सबसे ऊपर रख कर अपने लिए कुछ किया? क्या मैंने कभी होली-दिवाली की छुट्टी लेकर अपने काम से कुछ समय के लिए छुटकारा पाया? इन सब सवालों का जवाब मुझे सोचने पर भी नहीं मिला।

इसलिए, एक गृहिणी ना सिर्फ घर के काम-काज संभालती है बल्कि अपने घर की नींव को मजबूत बनाए रखती है। वो अपने सारे सुख-चैन भूल कर दूसरों के लिए दिन भर काम में लगी रहती है। वाकई एक गृहिणी सिर्फ एक शब्द या औहदा ही नहीं बल्कि उससे कहीं ज्यादा है।

ये एहसास होने पर मुझे अपने गृहिणी होने पर गर्व महसूस हुआ और उस दिन के बाद से मैं और शिद्दत से अपने गृहिणी होने के फर्ज़ को अदा करने लगी।

सभी बीमारियों का मुख्य कारण

श्री राजीव कुमार नैन
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

क्या आपने कभी यह सोचने की कोशिश की है कि आजकल के मनुष्य का स्वास्थ्य इतना नाजुक क्यों हैं? उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता इतनी कमजोर क्यों है कि उसे बीमार होते देर नहीं लगती? हर प्रकार की चिकित्सा सुविधाओं, बेहतर परिवेश, साफ़-सुथरे माहौल, स्वादिष्ट भोजन और सभी सुख-सुविधाओं के होने के बावजूद आजकल का मनुष्य 15-20 साल पहले वाले मनुष्य की तुलना में ज्यादा बीमार क्यों पड़ता है?

बीमारी क्या है?

शरीर की कार्यप्रणाली के या किसी अंग के सही ढंग से कार्य न करने को हम बीमारी कहते हैं। शारीरिक कमज़ोरी भी एक बीमारी है। कमजोर शरीर की क्षीण जीवन-शक्ति कई रोगों के होने का कारण बनती है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति में कई प्रकार के विकारों को रोगों की श्रेणी में रखा है जैसे काम में मन नहीं लगना, भूलना व एकाग्रता की कमी को एडल्ट अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर का नाम दिया गया है। दवा कंपनियां भी अपने फायदे के लिए नई-नई बीमारियों और उनकी दवाइयों के झूठे प्रचार द्वारा लोगों में डर और भ्रम को पैदा करती हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ज्यादातर लोग किसी न किसी विकार या बीमारी से ग्रसित हैं जिनमें से कुछ बीमारियाँ वास्तविक हैं तो कुछ भ्रामक हैं।

बीमारियों के कारण

शरीर में बीमारियों के पैदा होने के अनेक कारण होतें हैं। मुख्यतः निम्न कारणों से शरीर में बीमारी फैलती है-

पहला - किसी बाह्य सूक्ष्म जीव (Microbe) के शरीर में प्रवेश करने से :

बाह्य सूक्ष्म जीव कई प्रकार के होते हैं जैसे वायरस, बैक्टीरिया, कवक (Fungi), परजीवी (Parasites), रोगाणु (Germs) आदि। ये सूक्ष्म जीव मनुष्य में दो प्रकार से बीमारी फैलाते हैं।

प्रत्यक्ष संपर्क द्वारा- जैसे:

1. मनुष्य से मनुष्य (छूने से, खांसी-छींकने से, सहवास से)
2. जानवरों से मनुष्यों (जानवरों द्वारा काटने से, पशु उत्पाद खाने से)
3. माँ से बच्चे को बीमारी का संक्रमण

अप्रत्यक्ष रूप से- जैसेः

1. किसी संक्रमित वस्तु के छूने से (जैसे कोरोना)
2. संक्रमित खाद्य पदार्थ खाने से
3. मच्छर, कीटों और कीड़ों के काटने से

दूसरा - शरीर के अंदर की गड़बड़ी से बीमारी का पैदा होना:

कैंसर, डायबिटीज़, उच्च व निम्न रक्तचाप, पेट का अल्सर, खून में खराब कोलेस्ट्रोल की बढ़ोतरी आदि बीमारियां शरीर के अंदरूनी अंगों के ठीक ढंग से कार्य न करने के कारण होती हैं। शरीर के दैनिक कार्यों में भोजन को पचाना, उससे रक्त का निर्माण करना, अशुद्ध रक्त को शुद्ध करना और विषैले व अनावश्यक पदार्थों को उचित छिद्रों द्वारा बाहर त्यागना आदि शामिल हैं। जब शरीर इन कार्यों को उचित ढंग से नहीं कर पाता है तो शरीर की सफाई का कार्य अच्छी तरह से नहीं हो पाता है और शरीर में गंदगी जमा होने लगती है जिसका संकेत शरीर हमें बदहज़मी, एसिडिटी, पेट में

गैस, आदि के रूप में देता है। यह गंदगी रक्त को दूषित कर देती है और जब तक रक्त दूषित रहेगा तब तक शरीर रोगग्रस्त रहेगा। आधुनिक जीवन-शैली, खराब दिनचर्या और खाने-पीने की गलत आदतों के कारण हम शरीर को कमजोर व जीवन-शक्ति को क्षीण कर रहें हैं। क्षीण जीवन-शक्ति वाला शरीर अपनी सफाई के दैनिक कार्य ठीक ढंग से नहीं कर पाता है और ऐसा शरीर रोगों को निमंत्रण देता है। इसके अलावा आइए कुछ बातों पर और ध्यान दें:

- आजकल हमारा भोजन प्रकृति से कम और फैक्ट्रियों से ज्यादा आता है जो निर्जीव, पोषण रहित और शुद्धता के मामले में बिल्कुल भी ठीक नहीं होता है। मिलावट युक्त, पेस्टिसाइड युक्त और संसाधित (प्रोसेस्ड) खाद्य पदार्थ कभी भी शरीर को पोषण नहीं देते हैं इसके विपरीत बीमार जरूर करते हैं। सजीव भोजन जैसे फल, सब्ज़ी, मेवे, अंकुरित अनाज आदि का इस्तेमाल ही शरीर में जीवन शक्ति का बढ़ा सकता है।
- अधिक शक्कर वाले कृत्रिम जूस और सोडा हमें डायबिटीज का मरीज बना रहे हैं। शराब लीवर को खराब करती है और चाय एसिडिटी पैदा करती है। ये सब पता होने के बावजूद, हम इन्हें छोड़ नहीं रहे हैं।
- मनुष्य आजकल तंग गलियों, तंग मकानों, प्रदूषित वातावरण और तनाव पूर्ण माहौल में रह रहा है जिसके कारण वह श्वसन संबंधी और मानसिक रोगों से ग्रसित हो रहा है।
- शराब, तम्बाकू, और अन्य नशे हमें शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के रोग दे रहे हैं।
- योग और व्यायाम की कमी हमारे शरीर को अक्रियाशील और स्थूल बना रही है। शरीर का लचीलापन खत्म हो रहा है जिससे शरीर अपनी पूर्ण क्षमता से कार्य नहीं कर पाता है। शरीर में नई कोशिकाओं के निर्माण की प्रक्रिया धीमी हो जाती है।
- क्रोध, ईर्ष्या, प्रतिहिंसा, तनाव, भय और कामवासना आदि मनोविकारों की स्थिति में रक्त में अनेक रासायनिक परिवर्तन होते हैं यह भी अनेक रोगों का कारण बनते हैं।

सभी बीमारियों का मुख्य कारण

आज के प्रदूषित वातावरण, तनावपूर्ण माहौल और खराब जीवन शैली के दौर में बीमारियां शरीर पर हमला करती रहती हैं। इनसे पूर्ण रूप से बचा नहीं जा सकता है। यहाँ जरूरत इस बात पर ध्यान देने की है कि किसी बीमारी के शरीर पर आक्रमण करने पर शरीर की क्या प्रतिक्रिया होती है। कमजोर रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) और क्षीण जीवन-शक्ति वाला शरीर जल्दी ही बीमारी के आगे घुटने टेक देगा और वह बीमारी को अपने ऊपर हावी होने देगा। इसके विपरीत उच्च रोग प्रतिरोधक क्षमता वाला ऊर्जावान शरीर बीमारी को टिकने नहीं देगा। उदाहरण के लिए कोरोना को देख लो यह किसी मनुष्य पर जल्दी असर करता है तो कुछ संक्रमित लोगों में इसका पता भी नहीं चलता और वो अपने आप ठीक भी हो जाते हैं। किसी भी रोग का सर्वप्रथम इलाज आपके शरीर में है। उच्च रोग प्रतिरोधक क्षमता और ऊर्जावान शरीर ही आपको रोगों से बचा सकता है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) और जीवन शैली एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। जब हम किसी प्रकार के भय, चिंता या तनाव में होते हैं तो इसका सीधा असर हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता पर पड़ता है यह कमजोर पड़ जाती है और हमारा शरीर बीमार होने के लिए उन्मुख (Prone) हो जाता है।

कोई भी रोग शरीर के अंदर की गड़बड़ी का संकेत मात्र होते हैं। यदि ये संकेत दिखाई नहीं देते तो उस गड़बड़ी का पता कैसे चलता और गड़बड़ी दूर कैसे होती। इसीलिए रोग को सकारात्मक नजरिये से देखें और भयभीत होने की बजाय आशावादी बनें जो आपके अवचेतन मन को सबल बनाएगा और बीमारी को दूर करने में मदद करेगा।

इसलिए, उचित भोजन, शारीरिक व्यायाम, योग, मैडिटेशन, और उत्तम रहन-सहन के द्वारा शरीर को मानसिक तौर पर सकारात्मक, शारीरिक तौर पर ऊर्जावान और प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाना जरूरी है तभी आप बीमारियों से लड़ने में सक्षम होंगे।

मेरी मैं

श्री रमन कटारिया
सहायक लेखा अधिकारी

खो गई है न जाने कहाँ मेरी मैं मुझमें
दिए तले यह अंधेरा न जाने कब तक रहेगा

सुबह भी ढूंढती है एक किरण की रोशनी को
न जाने कब गागर मेरा, मैं से भरेगा
खो गई है न जाने कहाँ मेरी मैं मुझमें

कब तक रहेगी न जाने यह शाम काली
कब तक रहेगा दिन में सूरज यह डूबा

तरस गई चाहत की ज़मीन एक बूंद को
आएगी, कब वह आंधी
क्या मन इसका बस इंतज़ार के अश्रुओं से ही
मिटेगा

हर पत्ता-पत्ता, सब दिशायें खड़ी हैं हाथ खोले
न जाने पानी दुआओं का इन पर कब गिरेगा
खो गई है न जाने कहाँ मेरी मैं मुझमें।

गज़ल

श्री विशाल कांवट
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

दरख्तों का ठौर-ए-ठिकाना होता है,
मुसाफिरों का आना-जाना होता है...

आदमी बस चारदीवारी करता है
औरत को फिर घर बनाना होता है...

पहला धोखा साँसे भारी करता है
दूजा खाली हंसना-हंसाना होता है...

बादल के हिस्से जो आया वो धुआँ था
बारिश को ज़मीं पर आना होता है...

जात-पाँत की जड़ तो साहिब कुंडली है
इश्क में कब ये मेल-मिलाना होता है...

नई बगिया में तितली जब शर्माती है
कहां भँवरा फिर याद पुराना रहता है?

पहले अल्हड़, फिर आशिक, फिर पागल
फिर जाकर के एक दीवाना होता है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित 1967) तथा रा.भा. नियम, 1976 (यथासंशोधित 1987 एवं 2007, 2011)

श्री ऊदल सिंह सोलंकी
वरिष्ठ अनुवादक

संविधान के लागू होने के साथ ही 26 जनवरी, 1950 से संविधान की धारा 343 के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनी। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह उल्लिखित है कि भारत सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। तत्पश्चात राष्ट्रपति जी ने सन् 1952 तथा 1955 और 27 अप्रैल, 1960 को राजभाषा हिंदी से सम्बंधित विस्तृत आदेश जारी किए। तदुपरांत संविधान में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित, 1967) तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 8 की शक्तियों का प्रयोग कर राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987) बना। राजभाषा अधिनियम एवं नियम से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण नियमों की जानकारी निम्नलिखित है-

नियम 5- हिन्दी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिंदी: हिंदी में पत्र आदि का उत्तर चाहे वे किसी भाषा क्षेत्र से प्राप्त हो और किसी भी राज्य सरकार, व्यक्ति या केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिया जाए।

नियम 7- आवेदन, अभ्यावेदन आदि का उत्तर: कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है। यदि कोई कर्मचारी अपना आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में करता है या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर करता है तो उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाए।

नियम 7 (3)– सेवा संबंधी आदेश या सूचना: यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाही भी है) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसको कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, हिन्दी या अंग्रेजी में होना चाहिए, तो वह उसे किसी विलम्ब के बिना उसी भाषा में दिया जाए।

अधिनियम धारा 3 (3) के दस्तावेज, मैनुअल आदि जो द्विभाषी होने चाहिए:

निम्नलिखित दस्तावेज आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जाए: संकल्प, साधारण आदेश, नियम, अधिसूचनायें, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्ति। संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज पत्र। संविदाओं और करारों का निष्पादन, लाइसेंस, परमिट और टेंडर के लिए नोटिस और प्रारूप।

नियम 11- (क) सभी मैनुअल, संहिता और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषी रूप में मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाए या प्रकाशित किया जाए।

(ख) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक

हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में हों। (ग) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नाम पट्ट, सूचना पट्ट, पत्र -शीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखी जाऐं व मुद्रित या उत्कीर्ण की जायें। यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह साधारण या विशेष आदेश द्वारा केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है। इस परन्तुक के अधीन छूट के लिए कोई प्रस्ताव उसका पूरा औचित्य दिखाते हुए राजभाषा विभाग को भेजा जाए।

नियम-10 कार्यसाधक ज्ञानः यह समझा जाएगा कि किसी कर्मचारी को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है,

यदि उसने मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या ऊँची परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है, या केन्द्रीय सरकार के हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या यदि केन्द्रीय सरकार द्वारा किसी विशिष्ट पदों के संबंध उस योजना के अंतर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है या वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस बारे में विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या वह राजभाषा नियम के संलग्न प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

नियम -9 प्रवीणताः किसी कर्मचारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है,

यदि उसने मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे ऊँची कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है, या स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के बराबर या उससे ऊँची किसी परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था, या वह राजभाषा नियम में संलग्न प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

नियम 10 (4) एवं 8 (4)

केंद्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों को जिनमें कार्य करने वाले कर्मचारियों में से 80 प्रतिशत ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है और जो राजभाषा नियम 10 (4) के अधीन अधिसूचित किए जा चुके हैं, विनिर्दिष्ट कर सकती है कि उनमें ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8 (4) के अंतर्गत टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।

देकर अपनी भाषा, संस्कृति, सभ्यता को मान ।
करें अपनी मातृभूमि का सम्मान।।

हिन्दी सप्ताह 2020 के शुभारंभ की एक झलकी

हिन्दी दिवस एवं सप्ताह 2020 का समापन समारोह

हिन्दी दिवस एवं सप्ताह 2020 का समापन समारोह की झलकियाँ

बच्चों का कोना

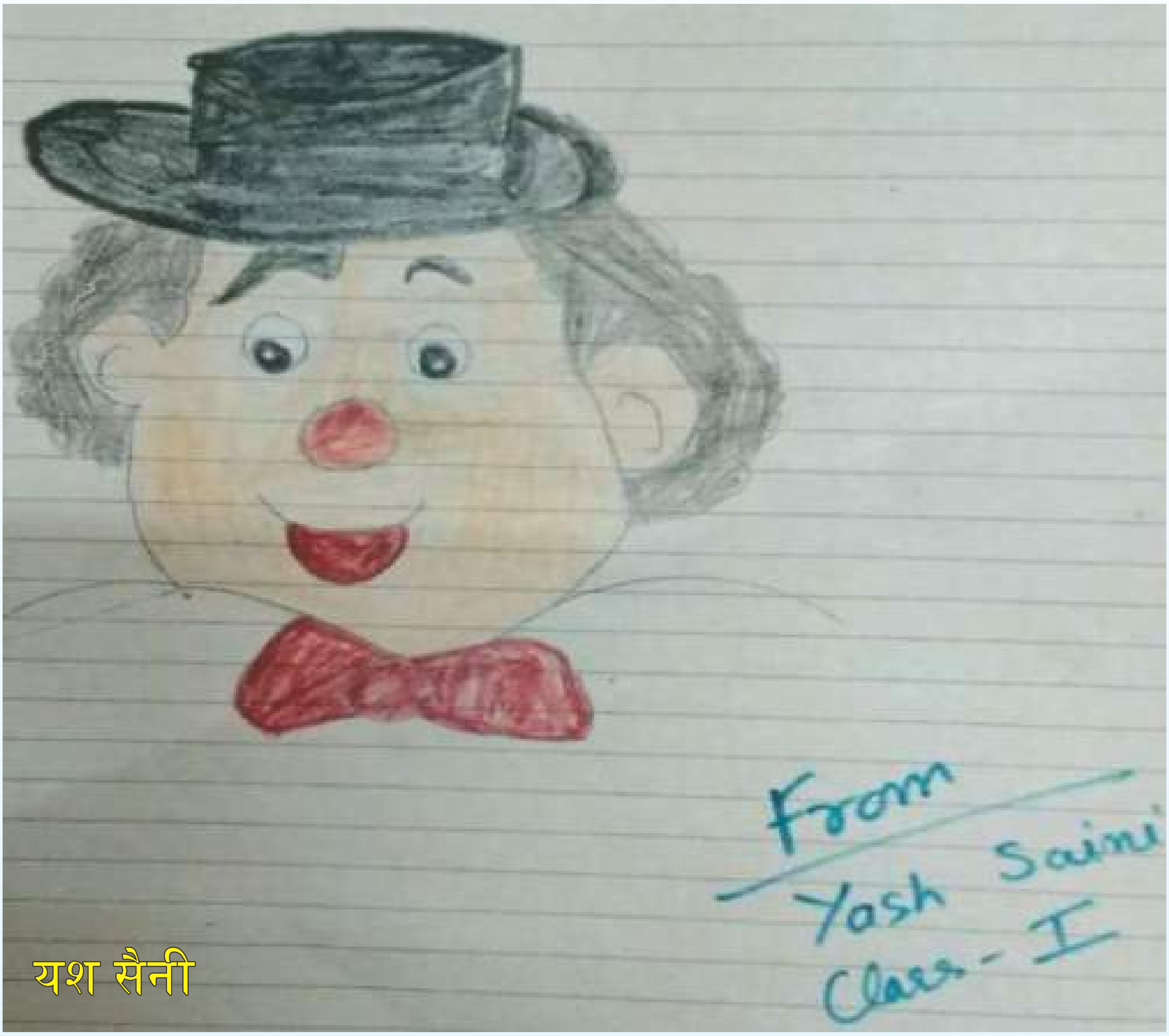

अरफा अयाज़ शला

ध्रुवी सैनी

THANK
YOU
DEAR DOCTORS NURSES &
WE SEE
'THE REAL GOD'
IN 'YOU'

Stay Home Stay safe

दिशी सैनी

चिनार ध्वनि

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
जम्मू एवं कश्मीर और लद्दाख
एवं
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) जम्मू एवं कश्मीर

एम.वाई राथर एवेन्यू, निकट प्रदर्शनी मैदान श्रीनगर-190009

JANDIYAL
PRINTING PRESS
0191-2553140